

आमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 17

अंक-19

जनवरी-I, 2017

(पाक्षिक)

माउण्ट आबू

8.00

सद्भाव और शांति के लिए आध्यात्मिकता अपरिहार्य

भारत तथा नेपाल से आए संतों, महंतों के साथ सभी धर्मों से जुड़े प्रतिनिधियों का सम्मेलन ब्रह्माकुमारी संस्था के शांतिवन में सम्पन्न हुआ

धर्मों का मूल है वैश्विक एकता



सम्मेलन में आये सभी संत महात्माओं का अभिवादन करते हुए ब्रह्माकुमारीज की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी। दादी जानकी तथा अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी के साथ कैंडल लाइटिंग करते हुए सभी संतगण।

शांतिवन। 'आज समय की ज़रूरत है कि सभी धर्मों के लोग एक मंच पर आएँ और विश्व वसुधैव कुटुम्बकम् के लिए उद्घोष करें, यही सही समय है' - गांधीनगर के अनंत विभूषित महा-मंडलेश्वर वैराग्यानंद गिरी महाराज। 'भारत देश में जब भी कभी मूल्यों का संकट आया है तब संत महात्माओं ने आध्यात्मिक शक्ति से मुक्ति दिलाने का महान कार्य किया है। उन्होंने संतों महात्माओं से आह्वान किया कि सभी को मिलकर बुराइयों से मुक्त भारत का निर्माण करना चाहिए, जिसकी शुरुआत ब्रह्माकुमारी संस्थान से हो गई है' - इन सर्च ऑफ पीस फाउंडेशन ऋषिकेश के

संस्थापक स्वामी योगी अमरनाथ। 'राजयोग और ध्यान मनुष्य को आध्यात्मिक ऊंचाइयों की ओर ले जाता है। यही एक रास्ता है जो परमात्मा के समीप ले जाएगा। जहाँ से मनुष्य अपना भाग्य बना सकता है। वर्तमान समय समाज और दुनिया की हालत तेज़ी से बदल रही है, ऐसे में तेज़ी से हो रहे मूल्यों की गिरावट को रोकना समय की मांग है। ऐसे में ज़रूरी है कि हम अपनी आंतरिक स्थिति को बढ़ाएं। इसके लिए राजयोग से बेहतर दूसरा कोई उपाय नहीं है' - ब्रह्माकुमारीज की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी। धार्मिक प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका

ब्र.कु. मनोरमा ने सभी संतों का आह्वान करते हुए कहा कि वे ऐसी जगह पर

की शक्ति पैदा करेगी। कार्यक्रम में शिया काउंसिल ऑफ



सम्मेलन के दौरान समूह चित्र में सभी संत महात्माओं के साथ दादी जानकी।

आए हैं जहाँ से आध्यात्मिकता की लौ प्रत्येक मनुष्य के अंदर शांति और प्रेम

इंडिया मुम्बई के महासचिव मौलाना जहीर अब्बास, घाटकोपर मुम्बई के

ओशो प्रचारक स्वामी विट्टल तथा प्रभाग के मुख्यालय संयोजक ब्र.कु. रामनाथ, अखिल भारतीय साध्वी शक्ति परिषद दिल्ली की महामंत्री महंत साध्वी प्रज्ञा भारतीय, अखिल भारतीय साध्वी शक्ति परिषद दिल्ली की उपाध्यक्ष महंत साध्वी विभानंद गिरी, ब्रह्माकुमारी संस्था की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी, बेळगाम के राजचोटेस्वर महास्वामी, ब्रह्माकुमारी संस्था के महासचिव ब्र.कु. निर्वैर, शांतिवन की कार्यक्रम प्रबंधिका ब्र.कु. मुन्नी, वेदांताचार्य सिद्धपीठ भरतपुर के डॉ. स्वामी कौशल किशोरदास महाराज ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

आंतरिक और बाह्य प्रकृति के सामंजस्य से वैश्विक समरसता

नई दिल्ली। ब्रह्माकुमारी संस्था के साइंटिस्ट एवं इंजीनियरिंग प्रभाग द्वारा दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन 'क्लाइमेट चेंज' का आयोजन सत्य साई सेंटर में हुआ। इस सम्मेलन में केन्द्रीय आयुष मंत्रालय, भू-विज्ञान मंत्रालय, केन्द्रीय विज्ञान एवं तकनीक विभाग, डी.आर.डी.ओ. आदि संस्थाओं की भी सहभागिता रही।

भारत सरकार खनन मंत्रालय के सचिव बलविंदर कुमार ने कहा कि आंतरिक प्रकृति और मन को शांत एवं नियंत्रण करने के लिए हमें बाह्य परिवर्तन को स्वीकार करने की शक्ति और अपने विचारों को साक्षी हो देखने की क्षमता



विकसित करनी होगी। भौतिकवादी तथा उपभोक्तावादी जीवन शैली के कारण हम बीमार हो रहे हैं और प्रकृति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। इसलिए हमें

प्राचीन प्राकृतिक प्रकृति एवं सादे जीवन शैली को अपनाना होगा।

ब्रह्माकुमारी संस्था के मुख्य वक्ता ब्र.कु. बृजमोहन ने कहा कि वर्तमान समय

आत्मा ही मात्र एक ऐसी चीज़ है जो ग्रैविटी से बंधी नहीं है और अविनाशी है। बस हमें इस क्लाइमेट चेंज में अपनी प्रदूषित मानसिकता का परिवर्तन करना है जिससे हम एक नई दुनिया सतयुग की स्थापन कर सकेंगे।

विशिष्ट अतिथि के रूप में इंजीनियर्स इंडिया लि. के निदेशक वी.सी. भंडारी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मानव के विचारों और व्यवहार में परिवर्तन से क्लाइमेट चेंज हो रहा है, समुद्र का लेवल बढ़ रहा है, ग्लेसियर पिघल रहे हैं। इसलिए हमें आचरण में सकारात्मक परिवर्तन करके प्रकृति के अनावश्यक छेड़छाड़ को रोकना होगा।

साइंटिस्ट एंड इंजीनियरिंग प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु. मोहन सिंघल ने कहा कि क्लाइमेट चेंज के हम चरम पर हैं जो प्रतिवर्ष परिवर्तन हो रहा है। यदि हमें इस परिवर्तन को रोकना है तो हमें अपनी भौतिकवादी सोच का अध्यात्म वादी सोच में परिवर्तन करना होगा।

ब्रह्माकुमारी संस्था के दिल्ली ज़ोन की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रुक्मिणी ने कहा कि परमात्मा राजयोग एवं आध्यात्मिक ज्ञान के द्वारा हमारा परिवर्तन कर रहा है जिससे हम नई दुनिया के लायक बन सकें और इस सृष्टि का वातावरण सुंदर बन जाये।

प्रार्थना से ज़्यादा महत्व ईश्वर के होने का

आघातजनक, फिर भी सत्य हकीकत यही है कि प्रार्थना को ज़्यादा महत्व दिया गया है। जो कि कई जगह प्रार्थना एक शिष्टाचार मात्र बनकर रह गई है। कहां फिर प्रार्थना रोज़िंदी क्रिया या रीति रिवाज़ की प्रवृत्ति बनकर रह गई है, और हाँ, फिर प्रार्थना ईश्वर प्रत्येक की मांग से आजीवन स्वरूप धारण कर रह गई है। प्रार्थना की प्रभावकता स्वयं सिद्ध है, लेकिन उस प्रभावकता साधने की प्रक्रिया घोर अपेक्षा बन गई है।



- ब. कु. गंगाधर

व्यक्ति को परिणाम ज़्यादा पसंद हैं, प्रक्रिया नहीं। हिमालय के सर्वोच्च उच्च शिखर एवरेस्ट विजय की बात सब करते हैं, लेकिन उस विजय प्राप्त करने के लिए किया गया पुरुषार्थ, उस विजय प्राप्ति के लिए किया गया श्रम, इसपर शायद ही कोई विचार करते हैं।

हकीकत में परिणाम से ज़्यादा प्रक्रिया का महत्व है। जब हम कोई सुंदर कवि-कृति पढ़ते हैं तो परिणाम हम पाते हैं, लेकिन उसका सच्चा आनंद तो तब आता है, जब हम जानते हैं कि कैसी प्रक्रिया में से रचयिता कवि गुज़रा होगा और परिणाम स्वरूप ऐसी सुंदर काव्य रचना का सृजन हुआ!

लोग महात्मा गांधी की सिद्धि की बातें करते हैं, लेकिन उस सिद्धि के लिए उनके द्वारा किये गये प्रयत्न भूल जाते हैं। गांधी जी की अहिंसा की बात हम ज़ोर-शोर से करते हैं, परंतु क्या उस अहिंसा की सिद्धि के लिए गांधी जी द्वारा दिये हुए गुणों की तालीम का विचार करते हैं कोई? जब यह तालीम हो, तब ही अहिंसा का मार्ग सफल होता है। अहिंसा के लिए उच्च कोटि की त्याग वृत्ति, न्यायी वर्तन, आत्म सम्मान का भान, देह-पीड़ा सहन करने की शक्ति जैसे आंतरिक गुणों की आवश्यकता पर गांधीजी ने भार पूर्वक कहा था कि अहिंसा के मार्ग पर चलने पर ज़मीन रहे न रहे, धन छोड़ना पड़े, शरीर का भी त्याग करना पड़े, तो भी अहिंसा का उपासक उनकी परवाह ना करे, ऐसा उन्होंने कहा था। उन्होंने कहा था कि अभय हुए बिना पूर्ण अहिंसा का पालन संभव ही नहीं। अहिंसा की तालीम के लिए मरने की ताकत होनी चाहिए। अब विचार करें कि यदि व्यक्ति ने ऐसे गुणों की तालीम नहीं ली हो और ऐसे गुणों को नज़रअंदाज़ कर दिया हो, और फिर वह मात्र अहिंसा की भावना को रटता रहे तो सफल कैसे होगा?

ऐसे ही ईश्वर के आशीर्वाद के लिए गुणों की तालीम की ज़रूरत पड़ती है। ऐसी तालीम के लिए सबसे अधिक निर्णायक बात है व्यक्ति का ईश्वर के सम्मुख रहकर जीवन जीने का दृढ़ संकल्प, अर्थात् कि व्यक्ति की दृष्टि कोई सांसारिक सिद्धि प्राप्त करने की ओर न हो, अपितु ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए ही हो। सदा ईश्वर को सम्मुख रखने का अर्थ यही होता कि कोई भी कार्य करते वक्त ये विचार मन में रहे कि हमारे इस कर्म से ईश्वर प्रसन्न होगा या नाराज़? उनके जीवन के व्यवहार का माप-तोल का कांटा यही होगा कि जिससे ईश्वर खुश रहे ऐसा ही करना है, वो नाराज़ हो, ऐसा कभी नहीं करना।

वह दो रीति से ईश्वर के सम्मुख होगा। एक तो वह स्वयं प्रत्येक कार्य में ईश्वर को हाज़िर-नाज़िर रखेगा और दूसरा निरंतर वह ईश्वर के गुणों का चिंतन कर उन गुणों की प्राप्ति के लिए प्रयास करेगा। ऐसे गुण उसके व्यक्तित्व में शामिल हो जाएं, उसके जीवन में ये गुण खिले फूलों की तरह रहें - उसके लिए समान बन जाएंगे। जीवन व्यवहार में उचित रहते हुए, प्रलोभन और आकर्षण के बीच में रहकर, वो उन दिव्य गुणों को हृदय में समाने और फिर उन गुणों को व्यवहार में प्रकट करने का प्रयास करेगा।

इसलिए जीवन में जो कुछ भी शुभ कार्य होता है उसमें 'मैं निमित्त हूँ, कार्य कराने वाला तो ईश्वर है' ऐसा मानने वालों को जीवन में सफलता ना ही उसे अहंकारी बनाती है और ना ही असफलता उनको घोर निराशा में डुबा नहीं सकती। व्यक्ति ईश्वर को प्रसन्न करने का प्रयत्न करेगा, तब ही अपने आप वो दूसरों के मदद रूप होने का पुरुषार्थ करेगा। - शेष पेज 8 पर

भगवान जैसा प्यारा और मीठा इस दुनिया में कोई नहीं

ओम् शान्ति का अर्थ बाबा ने प्रैक्टिकल बताया है। याद रहे मैं कौन हूँ? मेरा कौन है? बाबा ने कर्मों की गुह्य गति ऐसी समझाई है, साथ-साथ अच्छे कर्म करते हुए सर्वगुण सम्पन्न बनने का जो भाग्य मिला है, किसी का अवगुण दिखाई न पड़े तब सर्वगुण सम्पन्न बनेंगे। सर्व के गुण हमको सम्पन्न बनने में बहुत मदद करते हैं।

हम सब एक के हैं, एक हैं। अच्छा लगता है ना। बाबा देख रहा है कि बच्चों को जो मैंने सिखाया है, समझाया है उससे यह जीवन यात्रा बड़ी अच्छी सफल हो रही है। ऐसी यात्रा भक्तिमार्ग में नहीं है।

हमारे लिये कलियुग चला गया, सतयुग आने वाला है, यह हमको पता है। बाबा के बच्चे हैं ना, कहता है मैं सतयुग में नहीं आता हूँ, तो कहाँ जाता है? कहाँ रहता है? हमको भी यह रीस होती है कि मैं भी परमधाम में बाबा के साथ रहूँ। आपको इच्छा है जहाँ बाबा रहता है वहाँ रहने की? इस समय बाबा सूक्ष्मवतन में है ना, वहाँ से कैसे हमको देख रहा है? संगमयुग पर बाबा मैं तुम्हें देखता रहूँ... बाबा भी कहते हैं बच्चे, मैं भी तुम्हें देखता रहूँ... जितना बाबा हमें देखता है उतना हम भी देखते हैं तो पूजनीय बन जाते हैं। अभी हम अपनी पूजा नहीं करायेंगे, पर पूजनीय बनना है। वन्दरफुल बाबा है, जैसे शिव भगवान ने ब्रह्मा द्वारा यज्ञ रचा। इतना अच्छा यज्ञ रचा है, जहाँ भोजन भी यज्ञ का इतना अच्छा और बाबा जो सुना रहा है वह भी बड़ा अच्छा है। हर मुरली पढ़ते सुनते

सुनाते बाबा, मुरली, मधुबन, सखी रे मैंने पायो तीन रतन। इसी से सारे विश्व की सेवा हो गई। मुरली में खुदाई जादू है। तो मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा, शुक्रिया बाबा जो हम यहाँ नुमाशाम के समय इकट्ठे होके याद में बैठते हैं, फिर दिल की जो सच्ची बात है वो आपस में शेर करते हैं। यह सारी दुनिया को पता चल गया है कि ब्रह्माकुमारियाँ क्या हैं और क्या कर रही हैं? यह सारा विश्व जानता है।

संसार में सन्देश देना कोई बड़ी बात नहीं है, पर हमारा चेहरा बतावे यह कौन है? दुनिया में जब कोई भी सुनते हैं, अनुभव करते हैं तो भूलते नहीं हैं। बाबा कहते हैं भूल मत जाना, क्या याद करना है? एक बाबा दूसरा न कोई, तो अभी आप भी सब ऐसे कहते हो ना, कोई है क्या, किसी का मित्र-सम्बन्धी? सभी हमारे मित्र हैं परन्तु बाबा जैसा मीठा, बाबा जैसा प्यारा कोई नहीं है। हमको भी ऐसा लायक बना रहा है जो चले वतन की ओर, खींच रहा है कोई डालके हमको प्रेम की डोर। इतना हम भाग्यवान तो क्या पदमापदम भाग्य है जो एकदम नज़र से निहाल स्वामी कींदा सतगुरु। यह सतगुरु बहुत अच्छा है। मैं पदमापदम भाग्यशाली अपने को समझती हूँ जो आदि रत्न बाबा ने सतयुग के आदि का भी अभी अनुभव कराया है। सतयुग में लक्ष्मी-नारायण का राज्य होगा। हम भी उस राज्य में आयेंगे, साथ में राज्य करेंगे।

साकार बाबा ने मुझे एक बारी कहा था कि

तुम राजाओं की सेवा करो तो डामा अनुसार कोई न कोई प्लान बनाके राजाओं की सेवा करने के लिए जाके समझाती थी, कि अभी यह जो



दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

राजाई तुमको मिली है कुछ अच्छा दान पुण्य किया है तो राजाई मिली है। यह राजाई कभी भी कोई छीन सकता है लेकिन हमारी राजाई तो अविनाशी रहेगी, कोई छीन नहीं सकता। यह नशा और निश्चय हो तो मज़ा है, इस मजे में फायदा ही फायदा है, क्योंकि यह कितनी खुशी की बात है। इसलिए मैं कहती हूँ मेरे से खुश-खैराफत पूछो नहीं, देखो। कितना सुख मिला है! न दुःख देना, न दुःख लेना। अगर मानो कोई मुझे दुःख दे रहा है, वो याद करूंगी जैसेकि फलाने ने फलाने टाइम मुझे दुःख दिया था या अभी भी कोई दे रहा है। तो उसे याद करके दुःखी हो जाऊंगी। लेकिन बाबा ने हमारे तो दुःख का नाम निशान ही गुम कर दिया है। न दुःख देना, न दुःख लेना इसके बदले दुआयें देना, दुआयें लेना। कोई कोई हमारे पास आते हैं दुआ दो, आशीर्वाद दो, मैं कहती हूँ आशीर्वाद मांगने से नहीं मिलती है। आप सच्च ई क्या है उसकी गहराई में जाओ और देही-अभिमानी स्थिति यानी सोल-कॉन्सियास रहो तो इससे बहुत कमाई होती है। इस कमाई की सम्भाल के लिये कोई कबाट आदि में रखने की जरूरत नहीं है।



दादी हृदयमोहिनी
अति. मुख्य प्रशासिका

आजकल के ज़माने में प्रवृत्ति में एक फिक्र जाता है तो दस आते हैं, लेकिन वह हमारे लिए नहीं हैं, क्योंकि हमारे पास आया, हमने बाबा को दे दिया बस। हम बेफिक्र बादशाह। दिल से दिया, दिल से बाबा को साथी बनाया तो कोई फिक्र नहीं। आप कहेंगे शिवबाबा तो है निराकार, हम तो साकार में हैं, लेकिन ब्रह्मा बाबा भी तो हमारे जैसा ही साकार था। अंतिम जन्म था, आयु भी वानप्रस्थ अवस्था की थी, सब अनुभव था, व्यापार का, प्रवृत्ति का, भक्ति का... सब अनुभव था। ब्रह्मा बनने के बाद भी कितनी आत्माओं के जीवन की ज़िम्मेवारी थी, फिर भी बेफिक्र रहे और यह नया क्रान्तिकारी काम था, उस समय दुनिया के आगे यह एक चैलेंज थी। पवित्रता की बात जो लोगों के लिए असंभव थी, कहते थे आग और कपूस साथ कैसे रह सकते हैं। साथ रहें और विकारों की आग न लगे, यह तो असंभव है। तो आप सोचो, बाबा के सामने कितने विघ्न आये होंगे। फिर भी बाबा बेफिक्र बादशाह। ऐसे बाबा कहते बच्चे फॉलो करो। जब भी ऐसी कोई बात आती है, तो ब्रह्मा बाबा का सैम्पुल सामने देखो।

हमने बाबा को बचपन से देखा है, कभी भी बाबा के चेहरे पर फिक्र की लहर नहीं देखी।

प्रवृत्ति में रहते ब्रह्मा बाप समान बेफिक्र बादशाह बनो

बाबा को दो शब्द बहुत पक्के थे - बच्चे, नथिंग न्यु। दूसरा - यही शब्द बाबा के मुख पर था - बच्ची, ज़िम्मेवारी शिवबाबा की है, हम तो निमित्त हैं। बाबा बैठा है। कुछ भी ऐसी बात हो जाये तो बाबा कहता बच्ची, इसमें भी अच्छाई भरी हुई है। मानो कुछ बुरा भी हो गया और हो रहा है, लेकिन फिर भी बाबा कहते थे जो हो रहा है वो अच्छा, और जो हो गया है वो बहुत अच्छा। यह बाबा का स्लोगन था। बाबा बुराई से भी अच्छाई निकाल, निगेटिव को भी पॉज़ीटिव नज़र से देखते थे। कोई निगेटिव बात हो गई या मन में आ गई, तो कहते यह तो बुरा हो गया, शिवबाबा तो भूल गया। उसी को ही सोचने में लग जाते हैं, लेकिन ऐसे बुराई में अच्छाई क्या लेनी है। क्यों हुआ यह बुरा, ज़रूर कोई हमारी ही कमज़ोरी का कारण होगा।

हमने गलती नहीं की दूसरे ने की, इसलिए इसमें हमारा तो कोई कसूर नहीं है, इसने ही किया... लेकिन बाबा कहता था अच्छा उसने कसूर किया आपने नहीं किया, इसलिए आप बहुत सच्चे और अच्छे हो, लेकिन उसने समझो क्रोध किया और उसके क्रोध को आपने फील किया, मेरे पास फीलिंग की बीमारी आई, तो वह बीमार हुआ क्रोध में और आप बीमार हुए फीलिंग में, तब तो मन चल रहा है। अंदर धारण हुआ, तभी तो आपके मन में क्यों, क्या, संकल्प चल रहे हैं। बाबा का स्लोगन क्या है - न दुःख दो, न

दुःख लो। देना तो नहीं है, लेकिन दूसरा कोई देता है तो लेना भी नहीं है, तब तो अच्छा-अच्छा हुआ। जो बुरा काम हुआ, उसको निगेटिव से पॉज़ीटिव में परिवर्तन कर उससे शिक्षा ले लो, तो आगे से मुझे क्या शिक्षा मिली, आगे से मुझे अपने में क्या करेक्शन करनी है? यह सोचो तो निगेटिव भी पॉज़ीटिव हो जायेगा। तो ऐसी बाबा की शिक्षा थी, ब्रह्मा बाबा की प्रैक्टिकल लाइफ थी। तो क्या ऐसा हम अपनी लाइफ में प्रैक्टिकली नहीं कर सकते हैं! बेफिक्र बादशाह हम नहीं बन सकते हैं? एक निगेटिव और दूसरा व्यर्थ। छोटी सी बात को बड़ा करना, बड़ी बात को छोटी करना - यह हमारे हाथ में है। यह नेचर होती है। बड़ी बात को नथिंग न्यु समझो, मुझे भविष्य के लिए क्या करना है, वह सोचो और फुलस्टॉप लगाओ क्योंकि बीती को सोचने से फायदा कुछ नहीं। हो गया, उसको सोचने से फायदा क्या है? बदल जायेगा? नहीं, वह तो हो गया। जैसे कहते हैं कि तीर कमान से निकल गया, वह फिर वापस आयेगा क्या? नहीं, इसीलिए योगी जीवन है हमारी, योगी जीवन में बेफिक्र बादशाह हैं तो योग लगेगा। कोई फिक्र है यह क्यों हुआ, यह क्या हुआ... यह फिक्र होगा तो फिर योगी जीवन नहीं होगी। दो घण्टे के योगी, चार घण्टे के योगी और बाकी भोगी हुए और क्या हुए? तो ऐसी हमारी निरंतर योगी जीवन हो।

ब्रह्माबाबा - चुम्बकीय व्यक्तित्व

- ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

ब्रह्मा बाबा की प्रतिभा बहुमुखी थी। उनके व्यक्तित्व का एक विशेष पहलू यह था कि कोई बच्चा हो या बूढ़ा, धनवान हो या निर्धन, विद्वान हो या अशिक्षित, जल्दी ही उनकी निकटता का अनुभव करता था। हरेक को ऐसा अनुभव होता था कि बाबा के मुखारविन्द से जो शब्द विनिमृत हो रहे हैं, वे आत्मीयता और अपनत्व को लिए हुए हैं। उनमें औपचारिकता कम है परंतु शिष्टता-युक्त स्नेह अधिक। कितना भी कोई कमर कस कर उनके पास आता, वह उनके स्नेह से घायल हुए बिना न लौटता। वह बाबा से दोबारा अथवा बार-बार मिलने की इच्छा मन में लेकर जाता। बाबा का प्यार पत्थर को भी पिघला कर पानी बना देता और तप्त का ताप बुझाकर उसे शांति और शीतलता प्रदान करता, उनके पास बैठकर, उनसे मिलकर, उनके वचन सुनकर ऐसा लगता कि इस बेगाने संसार में हमने यहाँ ही अपनापन पाया है। एक यही जगह है जहाँ कृत्रिमता नहीं बल्कि वास्तविकता है और जिसके वचन हम सुन रहे हैं, उसके मन में एक ऐसा प्यार और दुलार है जो इस विशाल संसार में ढूँढ़ने पर भी अन्य कहीं नहीं मिल सकता।



बाबा से मिलने पर उनका प्यार सबके मन में इतना गहरा उतर जाता कि उसकी गहराई समुद्र से भी अधिक, और उसकी छाप एक अमिट स्याही के ठप्पे की छाप से भी अधिक अमिट बन जाती। उनके वचन एक ऐसा प्रसाद का रूप थे जो सचमुच मन की चंचलता को हर लेते और आत्मा में मिठास भर देते। इसी प्रसंग में दिल्ली के एक व्यक्ति के वृत्तांत का उल्लेख करना समुचित होगा। वह बाबा का कट्टर विरोधी था। उसका कारण यह था कि उसकी धर्मपत्नी ईश्वरीय सेवाकेन्द्र में आती थी और वह उस सपत्नीक जीवन में भी ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने में सुदृढ़ थी। वह व्यक्ति समझता था कि बाबा ने उससे कुछ छीन लिया है और उसको भोग-सुख से वंचित किया है। अतः उसके मन में बाबा के प्रति घृणा, वैर, द्वेष और रुष्ट भाव था। एक बार जब बाबा दिल्ली में आये तो उसे मालूम हुआ कि जिस ईश्वरीय सेवाकेन्द्र पर उसकी धर्मपत्नी जाती है, वहाँ से एक बस प्रातः 4.00-4.30 बजे क्लास के भाई-बहनों को लेकर वहाँ क्लास के लिए जाती है, जहाँ बाबा ठहरे हुए हैं। एक दिन यह सोचकर कि वह भी उस बस के द्वारा वहाँ पहुँचकर बाबा से झगड़ा करेगा। प्रातः ही अपनी धर्मपत्नी के पीछे-पीछे आते हुए, धर्मपत्नी के मना करने पर भी केन्द्र पर पहुँचकर उस बस में बैठ गया। जिन लोगों को उसके व्यवहार और उसकी मानसिक अवस्था का पता था, वे सब सोचने लगे कि इसे साथ ले जायेंगे तो यह वहाँ जाकर झगड़ा करेगा। अतः नम्रता पूर्वक सम्मान देते हुए यह आवेदन किया गया कि बाबा से मिलने के लिए कोई समय निश्चित किया जाएगा और तब वह वहाँ जाए तो अच्छा होगा। परंतु वह कहाँ इस बात को मानने वाला था? उसने तो मन में झगड़े की ठान रखी थी। आयोजकों ने सोचा कि वहाँ पहुँचकर बस को थोड़ा पहले रोककर या तो दूर

से ही इसे माइक से सुनने देंगे या इसे बहुत पीछे बिठायेंगे और क्लास समाप्त होते ही इसे बस में साथ ले आयेंगे। वह वहाँ क्लास के अंत में जाकर बैठा परंतु बैठने के बाद वहाँ से हिला नहीं। क्लास के सारा समय उसने गर्दन भी नहीं हिलाई। आँखें भी शायद ही झपकी हों। वह बाबा को एकटक होकर देखता ही रहा और सुनते-सुनते मंत्रमुग्ध हो गया। क्लास के बाद जब उसे उठने के लिए कहा गया तब वह उठता ही नहीं था। उसकी आँखें इतनी गीली थी कि आँसू टपकने को आ रहे थे। बाबा से लड़ने की बजाय वह अपनी पत्नी को उलाहना देने लगा। वह बोला, बाबा तो

अपना बाबा मिल गया। बाबा ज्ञान-बिन्दुओं को जिस रीति से स्पष्ट करते, वह रीति भी विचित्र थी और सम्पूर्णता की ओर ले जाने वाली थी। वे ईश्वरीय ज्ञान के किसी भी सिद्धांत को सूक्ष्मता की सीमा तक ले जाते। उदाहरण के तौर पर, साहित्य-लेखन के कार्य में लगे होने के कारण मैं जब कभी उनके पास कोई लिखित निबंध अथवा लेख ले जाता तो उसमें शब्दों के साथ कई विशेषण जोड़ देते जिससे पाठक को तत्संबंधी तथ्य अधिकाधिक स्पष्ट होते जाते। गोया पाठक को 'ज्ञान' ही नहीं, 'विशेष ज्ञान' प्राप्त होता। एक बार की बात है कि जो



अस्सी साल का जवान है! कितना खूबसूरत है बाबा! कैसे सीधे बैठते हैं! तू अब तक पवित्रता की ही बात मुझसे कहती रही और ऐसे बाबा के बारे में तो कुछ बताया ही नहीं। मैं बाबा से मिलकर आऊँगा। वह टोली लेने के लिए बाबा की ओर बढ़ा, बाबा ने उसे पुचकारते और मुस्कराते हुए टोली दी और वह ऐसा खुश हो गया कि उसे भी

लिखित सामग्री मैं बाबा के पास ले गया, उसमें वर्तमान सृष्टि को कलियुगी सृष्टि कहा गया था जो कि ईश्वरीय ज्ञान के अनुसार ठीक ही था। बाबा ने कहा कि कलियुगी शब्द से पहले धर्म-ग्लानि युक्त, सत्यता-रहित शब्द जोड़ो। जब मैं ये विशेषण जोड़कर तथा अन्य संशोधन करके बाबा के पास लेख को पुनः ले गया, तब बाबा ने कहा कि इसमें

कुछ और विशेषण जोड़ने चाहिए और तीसरी बार कुछ और विशेषण जोड़ने को कहा। अंत में कलियुगी शब्द से पहले तमोप्रधान, भ्रष्टाचारी, पतित, आसुरी, मर्यादाहीन, हिंसा-प्रधान आदि-आदि शब्द भी जुड़े हुए थे। इसके बाद भी बाबा ने कहा कि 100 प्रतिशत और दिवालिया शब्द इसमें और जोड़ दो।

इसी प्रकार एक बार जब यह सुभाषित (सुवाक्य) लिखा गया कि "पवित्रता, सुख और शांति आपका ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है" तब बाबा ने कहा कि इससे पहले 100 प्रतिशत या सम्पूर्ण शब्द जोड़ो और यह लिखो कि '21 जन्मों के लिए' जन्मसिद्ध अधिकार है। यह लिखने के बाद फिर बाबा ने कहा कि प्रश्न उठता है कि ईश्वरीय जन्म कब होता है और यह अधिकार कब मिलता है? यह बात समझाते हुए उन्होंने इस सुवाक्य में "अब नहीं तो कभी नहीं" शब्द जोड़ने का निर्देश दिया।

ज्ञान को सम्पूर्णता से समझने और समझाने के ये प्रयत्न बाबा केवल लिखित सामग्री ही के द्वारा नहीं करते थे बल्कि जब कहीं सम्मेलन या प्रवचन आदि होता, उसमें भी बाबा तीन प्रकार की सम्पूर्णता की ओर ले जाने का सदा विशेष प्रयास करते रहते। एक तो बाबा इस ओर ध्यान खिंचवाते कि वक्ता की अपनी स्थिति पवित्र और योग-युक्त होनी चाहिए। इसे वे यों समझाते कि जैसे तलवार का जौहर होना ज़रूरी है, ऐसे ही पवित्रता और योग-युक्त स्थिति ज्ञान-रूपी तलवार का जौहर है। दूसरा वे इस ओर ध्यान खिंचवाते कि प्रवचन में कौन-कौन सी बात बताना ज़रूरी है। इसका स्पष्टीकरण करते हुए वे समझाते कि जैसे कोई अच्छा वकील ऐसा नुक्ता बता देता है कि जिससे बात जज की समझ में आ जाती है और जो जज पहले फाँसी की सजा देने की बात सोच रहा था, वह अब अपराधी को

मुक्त करने का निर्णय करता है। वैसे ही ज्ञानवान व्यक्ति को भी ऐसी-ऐसी बात सुनानी चाहिए कि पापी, पतित या अपराधी व्यक्ति की बुद्धि में वह ऐसी बैठ जाए कि पहले जहाँ वह भोग-विलास के जीवन की ओर प्रवृत्त था अब वह उससे मुक्त होने की बात का निर्णय करता है। बाबा कहते कि वकील को अगर समय पर प्वाइंट याद नहीं आयेगी और वे जज के आगे कुछ नहीं रखेगा तो अपराधी अपना मुकदमा हार जाएगा और दण्ड का भागी होगा। यहाँ तक कि हो सकता है, उसे मृत्युदण्ड भी भोगना पड़े। गोया वकील की छोटी-सी गफलत से कितना नुकसान हो सकता है। इसी प्रकार ज्ञानवान प्रवक्ता अगर भाषण के समय आवश्यक बातें कहना भूल जाता है तो सुनने वाले लोग विषय-विकारों में गोता लगाए दुःख-दंड के भागी बनते रहते हैं। तीसरा, वे इस बात की ओर ध्यान दिलाते कि बात समझाने की विधि क्या हो। केवल बात ही ज़रूरी नहीं होती, बात करने का तरीका भी महत्वपूर्ण होता है। बात कहना भी एक कला है। उस पर ध्यान देना, उसका अभ्यास करना, उसमें सम्पूर्णता लाना भी ज़रूरी है। इस बात को समझाते हुए वे कहते कि डॉक्टर जब किसी को टिंक्चर आयोडीन लगाता है तब वह उसे साथ-साथ सहलाता भी है, फूंक भी मारता है। जब कोई सर्जन किसी का ऑपरेशन करता है तो वह उसे क्लोरोफॉर्म सूँघाता है ताकि उसे दर्द न हो। जब कोई इंजेक्शन लगाता है, तब वह पहले सूई को उबलते पानी में डाल कर कीटाणु-रहित और संक्रमण-रहित करता है। इस प्रकार बाबा समझाते-दूसरों को सम्मान देते हुए तथा स्नेह और मर्यादा युक्त, शुभ और कल्याण की भावना से, अनुभव, निश्चय और ओज की भाषा से समझाना चाहिए, तब जाकर वह तीर ठिकाने पर लगता है। इस तरह बाबा में मैंने हमेशा नये-नये उमंग-उत्साह का संचार देखा।



हाथरस-आनंदपुरी कॉलोनी। हाथरस के सांसद से मुलाकात के दौरान उन्हें 'मेरा भारत व्यसन मुक्त भारत अभियान' के अंतर्गत हाथरस में की जा रही सेवाओं की जानकारी देने व माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के लिए अभियान की जानकारी सम्बन्धी पत्र भेंट करने के पश्चात् चित्र में उनके साथ ब्र.कु. शान्ता तथा अन्य।



आगरा-सिकन्दरा से.7। आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान विधायक गुटियारीलाल जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सरिता तथा ब्र.कु. गीता।



दिल्ली-पोचन पुर। नये सेवाकेन्द्र का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. शुक्ला दीदी। साथ हैं ब्र.कु. अनुसुइया, ब्र.कु. पूजा तथा अन्य भाई बहनें।



झज्जर-हरियाणा। नेहरू युवा केन्द्र द्वारा आयोजित 'युवा नेतृत्व एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम' में आमंत्रित किये जाने पर वहाँ प्रवचन करने के पश्चात् अकाउन्टेन्ट अरुणा चुग, नेहरू युवा केन्द्र, युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. भावना। साथ हैं ब्र.कु. पूनम तथा दीपक शर्मा, कलाकार।



असंसोल-प.बंगाल। रविन्द्र भवन में ब्रह्माकुमारों द्वारा आयोजित 'नारी सशक्तिकरण' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन के मेबर मेयर इन काउंसिल व कल्याणपुर एरिया के वार्ड काउंसलर अनिमेश दास, कुलती हिन्दी बालिका विद्यालय की हेडमिस्ट्रेस ममता मिश्रा, रोटरी क्लब की प्रेसीडेंट जयंती मलिक, दुर्बई सेवाकेन्द्र की डायरेक्टर ब्र.कु. ज्योति तथा अन्य। कार्यक्रम की मुख्य वक्ता रहीं महिला प्रभाग की मुख्यालय संयोजिका ब्र.कु. डॉ. सविता।



भुवनेश्वर-नागेश्वर तांगी। एल.एन. मिश्रा, डायरेक्टर, एच.आर., एम.सी.एल. तथा उनके काउन्टर पार्ट को सेवाकेन्द्र में आने का निमंत्रण देने के पश्चात् चित्र में उनके साथ ब्र.कु. इंदुमति, ब्र.कु. बिजया तथा अन्य।

हर आत्मा की अपनी यात्रा है

गतांक से आगे...

प्रश्न:- कुछ लोगों का ऐसा बिलीफ सिस्टम है कि लोग हमें मानते हैं, वो हमारी बात सुनते हैं, इसे आप कैसे लोगों को समझा सकते हैं?

उत्तर:- जब हम उनको बोल रहे हैं, उनको टोक रहे हैं या उनके प्रति जजमेंटल हो रहे हैं तो इसके पीछे हमारा यही बिलीफ सिस्टम कार्य करता है कि सारी दुनिया मेरी मुट्ठी में है और ये मेरे चाहने के अनुसार चलनी चाहिए।

दूसरा हमारा बिलीफ सिस्टम है कि हम अपनी खुशी के लिए दूसरों को कंट्रोल करने की कोशिश करते हैं, और उस प्रोसेस में अंदर ही अंदर और दर्द क्रियेट करते जाते हैं। इसे आप एक दिन के लिए कोशिश करके देख सकते हैं।

प्रश्न:- हम किसी कॉर्पोरेट बॉस के बारे में बात नहीं कर रहे थे। हम आम आदमी, चाहे आप माँ हैं या चाहे आप सबऑर्डिनेट भी हैं।

उत्तर:- जैसे 'माँ' आपने कहा एक पेरेंट चाइल्ड रिलेशनशिप में ये कंट्रोल की फीलिंग बहुत ज्यादा आती है। जबकि पेरेंट को किस कॉन्शियसनेस से अपने बच्चों को बड़ा करना चाहिए कि ये आत्माएं हैं, जो मेरे घर में आये हैं, मेरा रोल है इनको शारीरिक सुरक्षा देना, इनके बौद्धिक स्तर का विकास करना, इनको एक अच्छा वातावरण देना, इनको वो पालना देना जिससे कि वो अच्छा बन सकें। लेकिन हम

क्या चाहते हैं कि जैसा मैं चाहूँ वैसा होना चाहिए।

प्रश्न:- मैं ये सब कुछ क्यों कर रहा हूँ, इसलिए कि तुम मेरा सपना पूरा कर सको। जब तुमने मेरा ही सपना पूरा नहीं किया तो मैं ये सब क्यों करूँ...?

उत्तर:- वास्तव में हमें अपनी इस विचारधारा को बदलने की आवश्यकता है। हमें समझना चाहिए कि ये उस आत्मा की अपनी यात्रा है, उसकी अपनी पसंद है, उसकी अपनी इच्छायें हैं, उसकी अपनी नवीनता है और हम चाहते हैं कि जैसा मैं चाहता हूँ वो वैसा रोल प्ले करे, इससे तो उसकी अपनी क्रियेटिविटी दब जायेगी और वह सही गलत का निर्णय नहीं कर पायेगा। क्योंकि वो अपने थॉट्स से भी नहीं चल रहा और मेरे थॉट्स से तो वो कर ही नहीं सकता।

हमें पेरेंट चाइल्ड के रिलेशनशिप में बच्चे के साथ एक गाइड की तरह, एक मार्गदर्शक की तरह व्यवहार करना चाहिए। इससे उस बच्चे के साथ मात-पिता का रिलेशनशिप बहुत ही मज़बूत हो जाता है। लेकिन हम क्या करते हैं कि उनको हर चीज़ के लिए हमेशा टोकते हैं। इसके पीछे हमारा उद्देश्य यही होता है कि उसकी जीवन-यात्रा हमेशा एक समान चले। हम कितना भी कोशिश करें, उनके जीवन में उतार-चढ़ाव तो आने ही वाले हैं। अगर हम उनको गाइड करते हैं, मज़बूत बनाते हैं तो वो खुद ही जीवन में आने वाली कठिनाइयों का सामना कर लेगा। लेकिन हम क्या सोचते हैं कि हम बच्चों को इतना सही दिशा में ले जायें कि उनके जीवन में समस्या आये ही नहीं। लेकिन हम पेरेंट्स क्या करते हैं कि अपने कंट्रोलिंग वाले लक्ष्य को लेकर चलते हैं, उससे हम उसकी क्रियेटिविटी को दबा देते हैं। एक दिन हम ट्राय करके देखें कि हम औरों की स्क्रिप्ट नहीं लिखें।

प्रश्न:- इसके लिए हमें खुद अवेयर होना पड़ेगा। अब जब हमने अपने बारे में बात करनी शुरू की, अपनी हर थॉट को चेक करना शुरू किया, तब हमें महसूस हो रहा है कि हम कर क्या रहे थे!

उत्तर:- अगर हमें अपनी राय देनी भी है तो उचित अवसर देखकर बतायें, और बताने के बाद हम ये आशा भी न रखें कि वे वैसा ही करेंगे। जब वो उस तरह से नहीं कर पाते हैं तो हम उनको सही और गलत सिखाने के चक्कर में दुःखी हो जाते हैं। उस पर भी अगर उन्होंने कुछ व्यंग्य कर दिया तो मुझे तो गुस्सा आयेगा ही। आपने तो जो गलत किया सो किया वो आपका रोल था, लेकिन मैंने जो गुस्सा किया, मैंने जो हर्ट किया, तो उससे मेरा रोल खराब हो गया। तो मुझे क्या करना है, पहले मुझे अपने रोल पर ध्यान देना है। लेकिन मैं क्या करती हूँ कि आपके गलत निर्णय की आलोचना करने के लिए, मैंने अपना भी रोल खराब कर लिया, तो इससे हरेक एक्टर का रोल भी खराब होता गया।

एक साधारण थियेटर में भी हम देखते हैं कि अगर कोई एक्टर अपने रोल को भूल जाता है तो बाकी जो एक्टर स्टेज पर हैं तो उनका रोल भी खराब हो जाता है। - क्रमशः

स्वास्थ्य

बचें घुटने दर्द और रिफ्लेसमेंट से

50 साल के बाद धीरे-धीरे शरीर के जोड़ों में से लुब्रीकेन्ट्स एवं कैल्शियम बनना कम हो जाता है। जिसके कारण जोड़ों का दर्द, गैप, कैल्शियम की कमी, आदि समस्याएँ सामने आती हैं, जिसके चलते आधुनिक चिकित्सक आपको ज्वाइंट रिफ्लेस करने की सलाह देते हैं, तो कई आर्थिक रूप से समृद्ध लोग यह मानते हैं कि हमारे पास तो बहुत पैसे हैं तो घुटना चेंज करवा लेते हैं।

किंतु क्या आपको पता है कि जो चीज़ कुदरत ने हमें दी है, वो आधुनिक



विज्ञान या तो कोई भी साइंस नहीं बना सकता। आप कृत्रिम ज्वाइंट फिट करवा कर थोड़े समय 2-4 साल तक ठीक हो सकते हैं, लेकिन बाद में आपको बहुत ही तकलीफ होगी। ज्वाइंट रिफ्लेसमेंट का सटीक इलाज आज हम आपको बताने जा रहे हैं। वो नोट कर लीजिये और हाँ, ऐसे हज़ारों ज़रूरतमंद लोगों तक पहुँचायें जो रिफ्लेसमेंट के लाखों रुपये खर्च करने में असमर्थ हैं।

बबूल के वृक्ष को आपने ज़रूर देखा होगा। यह भारत में हर जगह बिना लगाये ही अपने आप खड़ा हो जाता है।

प्रयोग इस प्रकार करना है

बबूल (कीकड़) के पेड़ पर जो फली (फल) आती है उसको तोड़कर ले आयें, यदि आपको ये शहर में नहीं मिल रहे तो किसी गांव जायें वहाँ जितने चाहिये उतने मिल जायेंगे, उसको सुखाकर पाउडर बना लें और सुबह 1 चम्मच की मात्रा में गुनगुने पानी से खाना खाने के बाद केवल 2-3 महीने सेवन करने से आपके घुटने का दर्द बिल्कुल ठीक हो जायेगा, और इसके साथ-साथ आपको घुटने बदलने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।

डॉ. पवन कुमार, नेचरोपैथिस्ट, ग्रेटर नोएडा - 7838037030

अगर अच्छी नींद चाहिए तो...

एक स्वस्थ इंसान को 6 से 8 घण्टे की नींद की आवश्यकता होती है, ऐसा लोगों का कहना है। सबका ये कहना है कि यदि 3-4 घंटे किसी को नींद आ रही है तो वे बीमार हैं, लेकिन ऐसा है नहीं। अगर किसी को कोई शारीरिक या मानसिक कार्य नहीं है, और उसे नींद तीन से चार घंटे आती है, तो उसके लिए ये पर्याप्त है। हम यहाँ ये भी बताना चाहेंगे कि किन-किन कारणों से नींद नहीं आती।

नींद और मस्तिष्क का बहुत गहरा सम्बंध है। जब चिंता, तनाव या किन्हीं परिस्थितियों से नींद कम या गायब हो जाती है तो इसका प्रभाव मस्तिष्क पर पड़ता है जिसे नींद न आना कहा जाता है। वृद्धावस्था में इंसान शारीरिक श्रम बहुत कम करता है। शरीर के किसी हिस्से में दर्द होने से भी कभी नींद नहीं आती। किसी प्रकार की चिंता भी नींद न आने का मुख्य कारण होती है। शरीर में वायु अधिक बनने से भी बैचेनी रहती है और नींद नहीं आती।

कैसे आए अच्छी नींद

अधिक देर तक ना जागें। दस से ग्यारह बजे रात्रि तक बिस्तर में अवश्य चले जाएं।

सोने से पहले मौसम अनुसार ठंडे या गर्म जल से हाथ, मुँह व पैर धोकर बिस्तर पर जाएं।

रात्रि में कपड़े ढीले-ढाले व नर्म पहनें। कसे हुए सख्त वस्त्र भी नींद आने में बाधा पैदा करते हैं।

सोने वाले कमरे का वातावरण शांत और स्वच्छ रखें। रात्रि में बिस्तर की चादर बदल लें।

देर रात्रि में टी.वी., कम्प्यूटर न चलाएं। यदि अच्छा संगीत सुनने के शौकीन हैं तो आधा घण्टा पहले लेट कर धीमी आवाज़ में सुनें।

दिन में शरीर को सक्रिय रखें, क्योंकि शरीर और दिमाग थके होने पर भी नींद अच्छी आती है।

रात्रि का भोजन हल्का रखें और प्रयास करें कि 8 बजे तक भोजन अवश्य कर लें जिससे सोने और खाने के बीच समय मिल जाता है भोजन पचाने के लिए।

सुबह-शाम सैर व हल्का व्यायाम अवश्य करें। सिर पर तेल की मालिश से भी अच्छी नींद आती है।

सोने से पहले पैरों और टांगों पर सूखी मालिश करें ताकि दिन भर खड़े रहने, चलने-फिरने से थकी टांगों की मांसपेशियों को थोड़ा आराम मिले।

पहचाने मन की अद्भुत शक्ति को

हमने कई सारे मन को प्रेरित करने वाले वक्ताओं को सुना है, समझा है, वो हमेशा हर चीज़ को आपके अंतर्मन की शक्ति या सबकॉन्सायस माइंड से जोड़ते हैं। होता तो वैसे वही है, लेकिन एक प्रश्न उठता है कि सबकॉन्सायस या अंतर्मन को जानते और समझते कितने लोग हैं। हमारा अनुभव बार-बार इस तरफ इशारा करता है कि सबकुछ कॉन्सायस माइंड या चेतन मन है। वो क्यों,



क्योंकि जो पहले चेतन मन, या जो हम देखते हैं या सुनते हैं, वो थोड़ी देर बाद जब हम उसको भूल जाते हैं, और बाद में जब उसको याद करते हैं तो उसको हम अंतर्मन या सबकॉन्सायस माइंड कहते हैं। एक बात हम आपको अवश्य कहना चाहेंगे कि उदाहरण में ज्यादातर एक हाथी का उदाहरण लोग देते कि जैसे एक छोटे से हाथी को, जब वो बच्चा होता है, तो उसे एक पतली रस्सी के सहारे बांधा जाता है। उस पतली रस्सी को वो जब तोड़ नहीं पाता, तो थोड़े दिन बाद जब वो बड़ा हो

जाता है तो भी उसे पतले रस्सी के सहारे ही बांधा जाता है। वो उसे यही समझकर नहीं तोड़ता कि ये रस्सी बहुत मज़बूत है, ये टूटेगी नहीं। उसका मन उसे स्वीकार कर चुका होता है। वैसे हम लोग भी हैं। हम सभी शुरु से जो देखते आए, जो हमारे लिए किसी ने कुछ कहा, उसको हम स्वीकार करते आए, और आज

मन में उठने वाले संकल्पों का प्रयोग अपने जीवन में कैसे कर सकते हैं, उससे कितना लाभ हमें मिल सकता है, उसकी चर्चा हम इसमें करेंगे। दुनिया में भी लोगों ने मन की अद्भुत शक्ति का प्रयोग अपने आपको सफल बनाने में किया है, लेकिन वो अस्थायी है। हम स्थायी सफलता प्राप्त करने की कुछ विधियों का वर्णन करेंगे, जो निश्चित रूप से आपके लिए कारगर सिद्ध होंगी अगर आपने किया तो।

बड़े होने तक भी वो बात हमारी बुद्धि में वैसे के वैसे है। उदाहरण, जैसे किसी ने आपको कहा कि आपको ये बात समझ नहीं आती, आप किसी चीज़ की व्याख्या ठीक से नहीं कर पाते, या शारीरिक रचना को लेकर बोलें तो कह सकते हैं कि आपका सबकुछ ठीक है, लेकिन हार्ड थोड़ी कम है, वैसे तो आप बहुत स्मार्ट हैं, लेकिन आपकी चाल थोड़ी गड़बड़ है, आप कोई काम नहीं कर सकते, आप किसी

काम के लायक नहीं हो, ऐसी बातें हमने सबसे सुनी हैं और सुनते आ रहे हैं। अगर कोई पाँच साल के बच्चे से ये सारी बातें कही गई हों तो 20-22 साल के बाद वो उसे ऐसा ही बना देती है, वो अपने आपको अवसाद ग्रस्त, कमजोर मानने लग जाता है, और हम सोचते हैं कि इससे क्या फर्क पड़ता है! लेकिन सारा कुछ आपके बोलने और देखने का ही तो है।

अब आपको करना क्या है, अपने घर में रहने वाले छोटे बच्चे हों, बड़े हों, सबको आदर पूर्वक इस बात को अंदर फीड कराना है कि आप सबकुछ कर सकते हैं। जिस काम में उनका मन नहीं लगता, जो काम वे करना नहीं चाहते, उस काम को उनसे ही करवाना है आपको, लेकिन ये कहते हुए कराना है कि आप उसे कर सकते हैं, तो निश्चित रूप से वो उमंग-उत्साह में आकर करना शुरु कर देंगे। समस्या सिर्फ यही है कि हमारा आज बिल्कुल अटेंशन नहीं है, हम अनजाने में या जान-बूझकर सबको नर्वस करते हैं, किसी कार्य को करने की प्रेरणा नहीं देते, पहले ही हम ये मानकर बैठते हैं कि ये तो इससे होने वाला ही नहीं है। ये सारी बातों ने ही आज हमारे मन को कमजोर बना दिया, हमारी बातों के द्वारा किसी दूसरे के अंदर जो खुद की इमेज बनी वो कमजोर वाली बनी। वो अपने आपको वैसे ही मानने, समझने और जानने लग गया। तो निकालो सबको इस अवसाद ग्रस्त स्थिति से, क्योंकि ये काम आसान भी है और कठिन भी है, लेकिन करने की शुरुआत हमको करनी पड़ेगी।



मालेगांव कैम्प-महा। 'प्रभु मिलन भवन' का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. संतोष दीदी, क्षेत्रीय संचालिका, महा. एवं आ.प्र.। साथ हैं ब्र.कु. मंगला, ब्र.कु. शकु, ब्र.कु. ममता तथा अन्य।



कोल्हापुर-महा। 'राजयोग मेडिटेशन फॉर हेल्थ वेल्थ हैप्पीनेस' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. सूर्य, मा. आबू., ब्र.कु. सुनंदा, ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. उषा, गोडसे सर, कुलकर्णी सर तथा अन्य।



हाथरस-वसुन्धरा एन्क्लेव। चरित्र निर्माण प्रदर्शनी के दौरान जिला अधिकारी कृष्ण अविनाश को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रानी।



बाराबंकी-उ.प्र.। जिला जेल में कार्यक्रम के दौरान उपस्थित हैं ब्र.कु. ई.वी. गिरीश तथा अन्य।



झालावाड़-राज.। कृषि विज्ञान केन्द्र में विश्व मृदा दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ के ग्राम विकास प्रभाग की ओर से लगाई गई शाश्वत यौगिक खेती की प्रदर्शनी।



गरोठ-म.प्र.। मृदा स्वास्थ्य दिवस पर तहसील कार्यालय में यौगिक खेती से होने वाले फायदे की जानकारी देने के पश्चात् समूह चित्र में तहसीलदार श्रीमति राधा महंत, जेलर नवीन नीमा, नायब तहसीलदार चौहान जी, ब्र.कु. समिता तथा अन्य।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहली-10-2016

| | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|
| | 1 | 2 | | 3 | | 4 | 5 |
| 6 | | | | | | 7 | 8 |
| 9 | | | 10 | | 11 | | |
| | | 12 | | | | | |
| | | | | 13 | | 14 | |
| | 15 | | | | | | |
| | | | | | 16 | | 17 |
| 18 | 19 | | | 20 | 21 | | |
| 22 | | | 23 | | | 24 | |
| | | | 25 | | | | |

ऊपर से नीचे

1. आईना, शीशा (3)
2. समय की सबसे छोटी इकाई, पल (2)
3. कमाई, आवक (4)
4. लाइन, पंक्ति (3)
5. बुद्धि की....हमेशा एक बाप से जुटी रहे (2)
6. तुमने किये पूरे....हमारे, इच्छा (4)
8. कोमलता, सुकुमारता (4)
11. मेघ, बरसात करने वाले (3)
12. निराकारी, निर्विकारी....बनो (5)
14. कर्मशील, परिश्रमी, काम में कुशल (3)
16. धन, सम्पत्ति, स्वर्ण, दौलत (2)
17. मदद, सहायता, आराम, चैन (3)
18. नाव, बेड़ी, नैया (2)
19. कटि, शरीर का मध्य भाग (3)
20. धनुष, शरासन (3)
21. महिमा, प्रशंसा (3)
24. सत्य, रस (2)

बनें विजेता : पहली के कॉलम को काटकर व पेपर पर चिपकाकर उसके साथ उसका जवाब लिखकर हमें इस मीडिया के पीछे लिखे हुए पते पर भेजें। एक वर्ष के भीतर पूछे गए सभी पहलियों में जिसका सबसे ज्यादा सही जवाब होगा उन्हें विजेताओं के लिस्ट में शामिल किया जाएगा और वर्ष के अंत में उन्हें आकर्षक ईनाम दिया जाएगा। इसलिए पहली को ध्यान से पढ़िए, समझिए और भेज दीजिए हमारे पास उसका सही जवाब लिखकर और बनिए वर्ग पहली के 'विजेता ऑफ द ईयर'।

पहली की फोटो कॉपी या पोस्ट कार्ड पर भेजा गया पहली का जवाब मान्य नहीं होगा। पहली का जवाब भेजें तो उस लिफाफे पर आप अपना भी पूरा पता अच्छी लिखावट में लिखें, अपना मोबाइल नम्बर और हो सके तो अपना ई.मेल आईडी भी लिखकर भेजें ताकि हमें पहली का विजेता चुनने में कोई कठिनाई ना हो।

बायें से दायें

1. निपुण, होशियार, सती का पिता (2)
3. ज़रूरत, आवश्यक होने की अवस्था (5)
6. सौंप देना, भेंट करना, समर्पित करना (3)
7. पार लगाना, सद्गति देना (3)
9. युद्ध, लड़ाई, संग्राम (2)
10. ब्रह्मा बाप की तरह रोज़ रात को कर्मन्धियों की....लगाओ (4)
12. प्रतीक, चिन्ह (3)
13.सो मालिकपन का नशा रखो, बच्चे (3)
15. छठा विकार, अभिमान (4)
16. पाचक शक्ति, शारीरिक ताप जो भोजन पचाने का काम करता है (4)
18. कन्याओं को....की टोकरी नहीं उठानी चाहिए, मजदूरी (3)
20. लाइन, पंक्ति (3)
22.कटारी कभी नहीं चलाना है, कार्य, कर्म (2)
23.में भी पढ़ाई ज़रूर पढ़नी सुननी है, अस्वस्थता (3)
24. निरंतर, अनवरत, लगातार (3)
25. ईर्ष्या, द्वेष, घृणा (4)

- ब्र.कु.राजेश,शांतिवन।



कोलकाता। कला मंदिर हॉल में 'रोल ऑफ वुमेन्स इन वर्ल्ड ट्रांसफॉर्मेशन' कार्यक्रम के दौरान 'नारी सशक्तिकरण' विषयक रैली का झण्डी दिखाकर शुभारंभ करते हुए श्रद्धा अग्रवाल, को-चेयरपर्सन, प.बंगाल, नापराजित मुखर्जी, रिटा.आई.पी.एस., ब्र.कु. चक्रधारी, नादिरा पाथेर्या, न्यायाधीश, रीना वेन्कटेश्वरम, एडिशनल चीफ सेक्रेट्री, साईस एंड टेक्टनोलॉजी, प. बंगाल सरकार, ब्र.कु. कानन, ब्र.कु. पुण्यवति तथा अन्य।



छोटा उदेपुर-गुज. 'मूल्यनिष्ठ शिक्षण' विषय पर सेमिनार के दौरान मंच पर उपस्थित हैं कलेक्टर विजय खराड़ी, जिला पुलिस प्रमुख पी.सी. बरांडा, डॉ. हरीश शुक्ला, ब्र.कु. राज दीदी, ब्र.कु. ओंकार, ब्र.कु. मोनिका तथा अन्य।



धार-म.प्र.। इनर व्हील क्लब द्वारा आयोजित 'महिला सशक्तिकरण' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. सत्या, नगरपालिका अध्यक्ष ममता जोशी, अध्यक्ष सुनीता भाटिया तथा अन्य गणमान्य महिलायें।



मुम्बई-जोगेश्वरी ईस्ट। सड़क दुर्घटना में पीड़ितों की याद में आयोजित कार्यक्रम के दौरान मंच पर उपस्थित हैं डॉ. अरिफ खान, समाजसेवी, नसिरुद्दीन कादरी, ट्रस्टी, जामा मस्जिद, ब्र.कु. बिन्दु, बोरोवली वेस्ट, महेन्द्र पाल सिंह, प्रमुख गन्धी, शेर-ए-पंजाब गुरुद्वारा तथा ब्र.कु. मीना।



मेरठ-उ.प्र.। कलेक्ट्रेट स्थित बचत भवन में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा प्रशासनिक अधिकारियों एवं कलेक्ट्रेट कर्मियों के लिए मानसिक शांति एवं तनाव मुक्ति कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. डॉ. सुनीता, डी.एम. बी. चंद्रकला, अपर आयुक्त गया प्रसाद, ए.डी.एम. प्रशासन दिनेश चंद्र, ए.डी.एम. सिटी मुकेश चन्द्र, सीताराम मीणा तथा अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी गण।



शिकोहाबाद-उ.प्र.। ज्ञानचर्चा के पश्चात् उपस्थित हैं ए.सी.जे.एम. निशांत देव, सीनियर डिविजन फास्ट ट्रैक कोर्ट जज अर्चना यादव, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. पूनम, ब्र.कु. पूनम तथा ब्र.कु. राजपाल।

करो तपस्या, न बनो समस्या

- ब्र.कु. विश्वनाथ

अध्यात्म में विश्वास रखने वाले सभी लोग कहते हैं कि भौतिकवाद ही से सभी समस्याएँ पैदा हुई हैं। हमारी देह की सत्ता भी एक भौतिक सत्ता ही है और इसलिए देहाभिमान भी एक प्रकार का भौतिकवाद ही है। देह के प्रति आकर्षण, जो ही समयान्तर में 'काम' का रूप लेता है, भौतिकता नहीं तो आध्यात्मिकता थोड़े ही है? प्रकृति के रूप-लावण्य के पीछे लट्टू हुआ व्यक्ति प्रकृति ही का पुजारी कहा जायेगा न कि भगवान का भक्त। अंतर केवल इतना ही है कि वह पत्थर की मूर्ति के आगे आत्म-निवेदन न करके वात-पित्त, कफ के पुतले के पीछे पागल हुआ प्राणी है। वह तो एक प्रकार का शराबी है जो हुस्न की बोटल को पीता है और उसी में सुधबुध खोकर 'न खुदा ही मिला न वसाले सनम' (न तो भगवान ही मिला और न मूर्ति ही से मिलाप हुआ) की कहावत के अनुसार सब कुछ लुटा बैठता है।

इसी प्रकार, जो प्रकृति के पदार्थों या पैसों के लोभ के क्षोभ से विक्षिप्त है, वह भी प्रकृति का दास है, माया का मुरीद है। वह नारायण पद को पाने के बजाय 'नकद नारायण' का दीवाना है। वह प्रभु का परवाना न होकर पदार्थों के चक्कर काटता है, उन्हीं की परिक्रमा देता है। वह पकौड़ी और पकवान या कुर्सी और कराही का उपासक है। वह है तो अपने नेत्रों, जिह्वा या पेट का दास और केवल कहता है कि - 'हे प्रभु, मैं आपका दास हूँ।' अतः वह भी पक्का भौतिकवादी है, क्योंकि मटीरियल चाहिए, मनी चाहिए या मर्तबा चाहिए जो कि प्रकृति ही के विभिन्न रूप हैं।

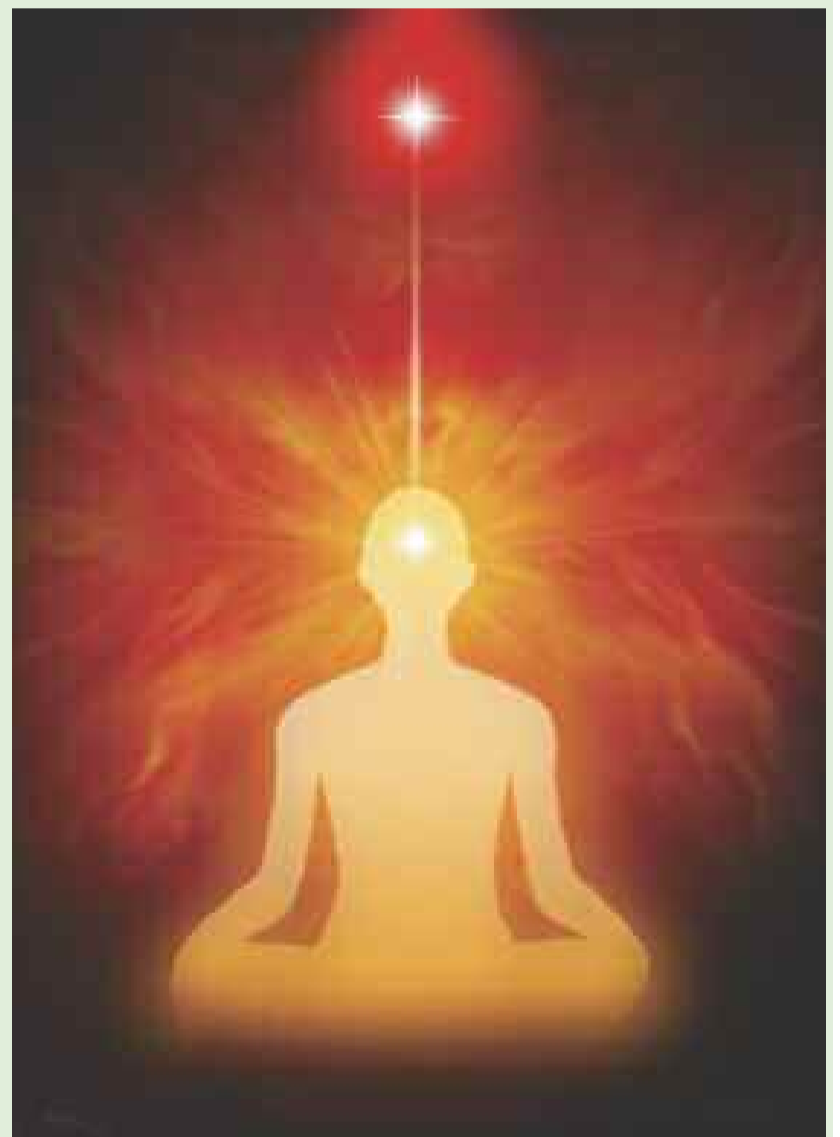
इसी प्रकार, मोह वाला व्यक्ति तो देहधारियों की देह में पूरा ही आसक्त है। जिसमें उसका मोह है, उसके लिए ही वह समर्पित है। वह प्रभु-समर्पित न होकर प्राणी समर्पित है या माटी के पुतलों ही का प्रशंसक है। तब क्या उसे भौतिकवादी नहीं कहेंगे?

कहने का भाव यह है कि जिसे हम देहाभिमान कहते हैं और सब समस्याओं की जड़ मानते हैं, वह देहाभिमान भी भौतिकवाद ही तो है। अतः जब हम यह कहते हैं कि 'आत्मा-निश्चय' ही सभी समस्याओं का समाधान है तो दूसरे शब्दों में हमारे कहने का भाव यही होता है कि अध्यात्मवाद ही सभी समस्याओं को सुलझा सकता है। यदि ऐसा है तो क्या इसका यह अर्थ न हुआ कि अध्यात्मवादी का जीवन भी समस्याओं को हल करने वाला होता है, वह समस्याओं को पैदा करने वाला नहीं होता। उसके सामने जब दूसरे लोग या परिस्थितियाँ समस्या के रूप में आती हैं तब वह उनका आध्यात्मिक जीवन-दर्शन के द्वारा हल करता है और स्वयं उसका निजी जीवन तो समस्योत्पादक न होकर हलदायक और फलदायक ही होता है।

यदि हम उपरोक्त से सहमत हैं तो हमें यह देखना होगा कि हम, जो अध्यात्मवादी हैं, वह

'समस्या' हैं या 'समाधान'? जिनके साथ हम रहते हैं, जिनके सम्पर्क में हम व्यवहार में आते हैं या जिनके साथ मिलकर हम कार्य अथवा सेवा करते हैं, क्या हम उनके जीवन में समस्या रूप तो नहीं बन जाते? हमारे मन में ईर्ष्या, द्वेष, मन-मुटाव, बदले की भावना, रोष, रोब, डांट-डपट, नाराज़गी और अनुशासनहीनता कहीं उनके जीवन में कठिन समस्या तो नहीं पैदा कर देती? हम उनकी नींद हराम तो नहीं कर देते? उनके लिये 'भूत' या 'कोतवाल' या आतंकवादी तो नहीं बन जाते? उनके निर्मल विचारों को रौंदते हुए, हम उनके मन को ज़ख्मी तो नहीं कर देते? उन्होंने जीवन-यात्रा के लिये जिन इरादों को कार या बस या वाहन के रूप में अपनाया था, उसे अपनी निरीह हरकतों से

हम ताप बुझा रहे हैं, या कहीं तपा तो नहीं रहे? 'तप' शब्द के कई अर्थ हैं। प्राचीन ग्रंथों में एक आख्यान के अनुसार असुरों ने तो 'तप' का यह अर्थ लिया कि तपने और तपाने के बिना संसार में कोई काम नहीं हो सकता। रजोगुणी 'मनुष्यों' ने इसका यह अर्थ लिया कि चहुं ओर अग्नि का ताप हो और ऊपर से सूर्याग्नि हो तो इन पाँचों अग्नियों में स्वयं को तपाना ही तप है। जो सतोगुणी वृत्ति के थे, उन्होंने 'तप' या तपस्या का यह अर्थ लिया कि कम बोलना, मीठा बोलना, धीरे बोलना वाणी का तप है। आत्मिक दृष्टि अथवा गुण-ग्राहक दृष्टि से देखना, यह नेत्रों का तप है। शुभभावना, शुभकामना, निंदा-स्तुति, मान-अपमान में एक समान रहना यह मन का तप है, आदि-आदि। शिव परमपिता



जलाकर खाक करने के निमित्त तो नहीं बनते? यदि हम ऐसा करते हैं तो फिर 'अध्यात्मवादी' किस अर्थ में हुए?

अध्यात्मवाद तो रूह को राहत, आत्मा को आश्रवासन, प्यासे को अमृत, तपे हुए को शीतल छांव देता है। वह तो समस्याओं को हल करता है। 'योग' तो जोड़ का नाम है, तोड़-फोड़ का नाम नहीं है। 'ज्ञान' तो औषधि अथवा अमृत है, वह आग लगाने के लिए इंधन नहीं है। आध्यात्मिकता मनुष्य में आत्मियता को विकसित करती है, अकालग्रस्त क्षेत्र की सूखी और अनुपजाऊ भूमि की तरह नहीं है बल्कि आँखों और दिल को तरावट देने वाली तराई और हरियाली की तरह है।

अतः पहले हमें यह देख लेना चाहिये कि

ने हमें समझाया है कि बुद्धि, स्मृति एवं संकल्प को एक बीजरूप शिवबाबा में स्थित करना 'तपस्या' अथवा 'योग' है क्योंकि इस जोड़ से जो अग्नि प्रज्वलित होती है, वह विकर्मों को दग्ध करती है।

इन रहस्यों को समझते हुए हमें चाहिये कि हम यह नीति वचन अपना लें कि - 'करो तपस्या, न बनो समस्या!' हम तो समस्याओं का समाधान करने वाले शिव परमात्मा की संतान हैं जो दूसरों को समाधि और समाधान देने वाले हैं और योग का प्रयोग सिखाने वाले हैं। तब भला हम समस्या कैसे बन सकते हैं? अतः 'समाधि और समाधान', 'आत्मा और अवधान' हमारे लिये पालनीय वचन हैं। इनका पालन हमारे लिए अति आवश्यक है।

सृजनहार की सर्जिकल स्ट्राइक

- ब्र.कु. कुंवर सिंह, दिल्ली

बीमार व्यक्ति को जब चिकित्सक देखता है, डायग्नोस करता है, तो उसके आधार से ही उसे दवाई लेने, परहेज करने को कहता है। अगर मरीज उसके कहे अनुसार ना चले तो बीमारी पुनः पुनः उभर कर सामने आती है। जब कभी बीमारी एक बार या दो बार उभरी तो उसे दवाइयों से तो ठीक किया जा सकता है, लेकिन जब वो नासूर बन जाये, जब उसका कोई इलाज न हो तो उसको ऑपरेशन कर, या सर्जरी कर उस अंग के भाग को काटकर निकालना पड़ता है। वो इसलिए कि वो बीमारी दोबारा ना शरीर में फैल जाये।

आज हर मानव मन पूर्णतया बीमार है। बीमार का अर्थ है कम्प्यूज्ड है, परेशान है, डिस्टर्ब्ड है। उसे कुछ समझ नहीं आ रहा। समझ में ना आने के कारण, मन गलतियों पर गलतियाँ करते ही जा रहा है। जब उसे मना किया जाता तो थोड़ी देर के लिए वो मान तो जाता है, लेकिन पुनः पुनः वही गलती करने

को आतुर रहता है। कारण साफ है कि आज मन में विचारों का एक जमघट है, जिसमें से हमें समझ नहीं आता कि किस विचार के ऊपर कार्य किया जाए। इतनी नकारात्मक ऊर्जा इसमें भरी हुई है कि कोई भी इसे निकालने में सक्षम नहीं है।

चिकित्सक है, जिसको हम वैद्यनाथ भी कहते हैं। वही हमारा सम्पूर्ण इलाज कर सकता है।

परमात्मा ने जब देखा कि इस धरती पर त्राहि-त्राहि मची हुई है, सभी लोगों के बीच में अफरा-तफरी मची है,

ठीक हो जाएगा। अर्थात् प्यार से मरीज को देखना पड़ता है। तब जाकर मरीज पर असर पड़ता है, दवाइयाँ असर करती हैं। परमचिकित्सक वैद्यनाथ शिव बाबा ने इस दुनिया के एक नरोत्तम को अपना सहयोगी बना उसे सारे गुण इलाज के

आज वैद्यनाथ ने प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा लगभग पच्चीस से तीस लाख परिवारों को प्यार और स्नेह देकर उनकी पूर्णतया सर्जरी कर दी है। उनके मन की व्यथा को उनसे अलग कर दिया है। सम्पूर्ण रूप से स्वस्थ मानव का एक मिसाल बन ये सारे परिवार एक सेना के रूप में पूरे विश्व में फैल कर सबके दिल तक पहुँचने की कोशिश कर रहे हैं। उसे वैद्यनाथ परमात्मा से जोड़ने की कोशिश कर रहे हैं। क्योंकि आप देखो, यदि आपकी सर्जरी हो भी जाए, लेकिन उसे बार-बार डॉक्टर को तब तक दिखाना पड़ता है, जब तक घाव पूरी रीति से भर न जाए। वैसे ही परमात्मा भी सुप्रीम डॉक्टर है, उससे बीच-बीच में बातचीत करके अपनी पारदर्शिता को उसके सामने रखना पड़ता है कि अभी हमारे मन में सिर्फ और सिर्फ आपकी बातें हैं, जो आपने हमें परहेज बताया है व्यर्थ बातों का, नकारात्मकता का, वो सारा हम सम्पूर्ण रीति से पालन कर रहे हैं। यही कार्य हम सुबह-सुबह अमृतवेलो या ब्रह्ममुहूर्त में साढ़े तीन से पौने पाँच बजे तक करते हैं, अगर थोड़ा बहुत घाव रह जाता है तो उसका इलाज हमें परमात्मा से उस समय मिल जाता है। तो आओ हम सब भी एक साथ क्यों ना उस परमात्मा के साथ जुड़कर अपनी सर्जरी करवा लें। क्योंकि ये सर्जरी हमको स्वर्गिक सुख देने के काबिल बना देगी। दोबारा कभी भी हम व्यर्थ, नकारात्मक, उलझन, परेशानी, दुःख-तकलीफ के आतंक से आतंकित नहीं रहेंगे। क्योंकि ये सर्जरी हमारा कायाकल्प कर देगी और फिर कभी हमको किसी डॉक्टर और सर्जरी की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी।



आप सोचें ज़रा! पूरे विश्व में लगभग सात सौ पचास करोड़ आत्माओं के मन के अगर ऐसे ही संकल्प हों तो क्या हाल होगा समाज या विश्व का। ऐसा नहीं है कि लोग अपने मन को ठीक करने के लिए योग, प्राणायाम या नेचरोपैथी या अन्यानेक ध्यान या ज्योतिष, वास्तु, टेलीपैथी का सहारा नहीं ले रहे। सब ले रहे हैं, लेकिन ठीक नहीं हो रहे। ठीक हो भी कैसे सकते हैं, क्योंकि सबके पास मन का अस्थायी इलाज है। स्थायी रूप से कोई भी इलाज करने में सक्षम नहीं है। इसलिए हमारे पास एक ऐसा परम

सबलोग स्वयं ही हिंसा के शिकार हैं, उस समय उसने कुछ आत्माओं को भेजकर या यों कहें कि उनके द्वारा पूरे मानव मन की सर्जरी करना आरंभ किया। ये सर्जरी किस तरह से होती है, उसके तौर-तरीकों को समझते हैं। जैसे हम जब किसी डॉक्टर के पास जाते हैं, और डॉक्टर का मूड ठीक ना हो और पेशेंट को अपनी सारी बीमारी भी उसे बतानी है तो मरीज को कैसा लगेगा! वो तो नर्वस हो जायेगा। इसलिए ज़्यादातर डॉक्टर्स एक बात की तसल्ली देते हैं सबको कि कोई बड़ा रोग नहीं है,

सिखाये, और उनको नाम दिया प्रजापिता ब्रह्मा। इलाज का पहला नुस्खा बताया कि यदि मानव मन की सर्जरी की शुरुआत करनी है तो उसे प्यार और स्नेह का सबसे पहले एनेस्थीसिया दो, जिससे मरीज अपने आपको पूर्णतया समर्पित कर देगा सर्जरी करवाने के लिए। इसी की तो कमी रही है दुनिया में कि कोई किसी को अपने मन की व्यथा बताने को तैयार नहीं। क्योंकि सभी अहंकार के वश हैं, अपने को सब सही समझते हैं, कोई किसी को सुनने को तैयार नहीं है, किसी के अंदर स्नेह प्यार नहीं बचा।

बंधन व उनसे... - पेज 11 का शेष

परेशान न करें-यह है बंधन-मुक्त की निशानी।

पाँचवा बंधन-परिस्थितियों व व्यक्तियों के प्रभाव का बंधन
बड़ा ही जटिल बंधन है यह। परिस्थिति व व्यक्ति हमारी स्थिति को डगमग न करें-यह है बंधन-मुक्त की निशानी। स्व-स्थिति व स्वमान से परिस्थितियों पर विजयी बनें व आत्मिक वृत्ति व मेरे-पन के त्याग से मनुष्यों के प्रभाव को समाप्त करें।

छठा बंधन-प्रकृति का बंधन
पहली प्रकृति है हमारा शरीर। शरीर की व्याधि हमें बंधन न लगे, नीचे न जाए, हमें दुःखी या परेशान न करे, यह है इस बंधन से मुक्ति। व्याधि पुरुषार्थ को रफतार दे, इसके लिए व्याधि का चिन्तन न हो, बल्कि स्वचिंतन व ईश्वरीय चिंतन हो। हमारे मुख से यह शब्द न निकले कि मैं बीमार था, इसलिए पुरुषार्थ नहीं कर

सका, बल्कि हम कहें कि हमारी व्याधि हमें कर्मातीत स्थिति के समीप ले आई। जैसे ब्रह्मा बाबा ने दिखाया-व्याधियों के समय वे अधिक मग्न थे, व्याधियों के प्रभाव से परे ईश्वरीय नशे में थे।

सातवां बंधन-सेवाओं का
सेवा तो बंधन नहीं है, बंधन मुक्त होने का साधन है। परंतु कभी-कभी हम सेवा को बंधन बना देते हैं। सेवा में रॉयल इच्छाएं हमें बंधन में बांधती हैं। सेवा में स्वार्थ भी बंधन का कारण है। तो हमें याद रहे कि जो सेवा स्थिति को डगमग करे, कर्मातीत होने में विघ्न लगे वह यथार्थ सेवा नहीं। सेवा का बल हमारी स्थिति को आगे बढ़ाता है, हमें आनंदित करता है व मायाजीत बनाता है। तो हम देख लें कि कोई सेवा हमें कर्मातीत बनने में बंधन तो नहीं है। जैसे पिताश्री सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी संभालते हुए भी सदा बंधन मुक्त रहे, वैसे ही सेवा की ज़िम्मेदारी हमें बंधन मुक्त बनाये।

आठवां बंधन-पदार्थों का

पदार्थों की उलझन, उन्हें प्राप्ति की आकांक्षा, पुनः उन्हें उपयोग की उलझन मनुष्य को उलझाये रखती है। परंतु पदार्थ व वैभव हमें बंधन में न बांधें इसके लिए हमें राजा जनक की एक कहानी याद रहे। एक सन्यासी ने राजा जनक से पूछा कि राजन् आप तो महलों में रहते हैं, इतने पदार्थों का उपभोग कर रहे हैं, नाच-गाना, दास-दासी रखते हैं, आप कैसे योगी या विदेही हो सकते हैं? क्या आप इन सबमें लिप्त नहीं हैं? जनक ने उत्तर दिया- महात्मन् 'मैं महलों में रहता हूँ, परंतु महल मुझमें नहीं रहता, मैं वस्तुओं का उपयोग करता हूँ, परंतु वस्तुएं मेरा उपभोग नहीं करती।' बस यही रहस्य है-अनासक्त होने का।

इस प्रकार स्वयं को हम चेक करें कि कर्मातीत होने में हमारे मार्ग में अब कौन-सा विघ्न है, बंधन है। उन्हें काटकर हम शीघ्र ही मुक्त बनें। इन सभी बंधनों को वैराग्य की तलवार से सहज ही काटा जा सकता है। संपूर्ण विश्व को बंधन-

मुक्त बनाने वाले भगवान के बच्चे होकर भी यदि हम बंधन युक्त रहे तो हमें भगवान के बच्चे कौन कहेगा?

बेहद का वैराग्य

जिन्होंने पिताश्री जी को देखा, वे जानते हैं कि प्रारंभ से ही उनका मन पूर्ण विरक्त, वैराग्य से भरपूर था। यह वैराग्य किसी स्थूल घटना पर आधारित नहीं था। इसका आधार ईश्वरीय अनुभव था, यह वैराग्य ज्ञान-युक्त था। इसलिए आदि से अन्त तक उनके वैराग्य में कमी नहीं आई। कोई भी वैभव, प्राप्ति या सेवा का विस्तार उनके वैराग्य को कम नहीं कर पाया। इसी महान वैराग्य की नींव पर वे महान त्यागी, महान तपस्वी व संपूर्ण बंधन-मुक्त बने।

हमें भी ज्ञान-युक्त होकर बेहद का वैराग्य धारण करना है। वैराग्य मन को स्थिर करता है, वैराग्य उपराम वृत्ति बनाता है, वैराग्य सभी शौक समाप्त कर केवल ईश्वरीय मिलन का शौक उत्पन्न करता

है। वैराग्यवान व्यक्ति ही अपने मन, बुद्धि व संस्कारों पर राज्य कर सकता है। अब समय समीप आ रहा है, घर जाने के दिन समीप आ रहे हैं, तो आसक्तियाँ व अनुराग क्यों? अब हमें चाहिए कि मन को पूर्ण विरक्त करें, जहाँ-जहाँ भी यह आसक्त हो, वैराग्य वृत्ति से इसे उपराम करें, तब ही हम समय से पूर्व कर्मातीत हो सकेंगे।

तो आओ... हम सभी ब्रह्मा वत्स अपने माननीय व परम पूज्य पिताश्री जी से प्रेरणा लेकर बेहद का वैराग्य धारण करें, उनके पद-चिन्हों पर चलकर कर्मातीत अवस्था की ओर बढ़ें। पिताश्री जी की भी यही श्रेष्ठ आशा है। उन्हें याद करते हुए हम सच्चे मन से उनकी आशाओं को पूर्ण करने का संकल्प करें। तब ही हम उनके महान व योगी वत्स कहलायेंगे, तब ही हममें, संसार उनका स्वरूप देख सकेगा और लोग मुक्तकंठ से गान करेंगे... 'शिव के रथी तूने जग में कर दिया कमाल'



पुखरायों-उ.प्र.। 'त्रिदिवसीय संगीतमय राजयोग शिविर' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए सपा विधायक नरेंद्र पाल, कांग्रेस जिला अध्यक्ष नीतम सचान, समाजसेवी मधुसूदन गोयल, नगर अध्यक्ष राजकुमारी आर्य, ब्र.कु. ममता, ब्र.कु. कृष्णा, ब्र.कु. अविनाश तथा अन्य।



फतुहा-बिहार। चैतन्य देवियों की झांकी का उद्घाटन करते हुए फतुहा के विधायक रामानंद यादव, खुशरूपुर के विधायक रणविजय यादव, समाजसेवी राज कुमार प्रसाद तथा बी.डी.ओ. राकेश कुमार। साथ हैं अन्य भाई बहनें।



बीवीगांज-फर्रुखाबाद(उ.प्र.)। व्यापारी सम्मेलन के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए अरुण प्रकाश तिवारी,प्रान्तीय महामंत्री,व्यापार मंडल,ददुआ, ब्र.कु. मंजु, श्रीमति मिथलेश अग्रवाल,उद्योगपति, ब्र.कु. गीता, अनार सिंह यादव,चेयरमैन,मेजर एस.डी.सिंह मेडिकल कॉलेज, देव भाई,हीरा व्यापारी, ब्र.कु. श्यामा तथा अन्य।



बिलाड़ा-जोधपुर(राज.)। सी.आई. ऑफिसर घेवसिंह गुसाईवाल और अधिकारी स्टाफ के साथ ज्ञानचर्चा के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. ललिता, ब्र.कु. निर्मला तथा अन्य।



दिल्ली-दिलशाद गार्डन। 'मेकिंग एग्ज़ाम ईजी' विषय पर ग्रेटर नोएडा के जे.पी. इंटरनेशनल स्कूल में विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. डॉ. रीना। ध्यानपूर्वक सुनते हुए स्कूल की प्रिन्सीपल हिमा शर्मा, अन्य शिक्षक तथा विद्यार्थीगण।



तोशाम-हरियाणा। शिव अवतरण संदेश यात्रा द्वारा गाँव-गाँव जाकर ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र.कु. देवराज तथा ब्र.कु. चंद्र।

परमात्मा के निमित्त कार्य निर्बन्धन बनाता

गतांक से आगे...

कर्म, बंधन तब बनता है जब उसमें आसक्ति रहती है। लेकिन जब कोई भी कार्य निमित्त होकर हम करते हैं, परमात्मा का समझते हुए हम करते हैं, तो वो कर्म हमें बांधते नहीं हैं, क्योंकि उसमें आसक्ति नहीं है। परमात्मा कहते हैं, मैं तटस्थ निरपेक्ष हूँ। ये संसार, ये ब्रह्माण्ड जो है इस विराट प्रस्तुतिकरण का मैं हिस्सा नहीं हूँ। मैं स्वयं ही सारी सृष्टि की रचना का स्रोत हूँ। मैं मेरी अधिष्ठता के सकाश से चराचर जगत को रचता हूँ। ये संसार चक्र नित्य घूमता रहता है। काल चक्र किस प्रकार चलता है, भगवान ने यहाँ कई जो विरोधाभासी बातें हैं, उसको स्पष्ट किया है। अवश्य परमात्मा वो शक्ति है जिसने सब कुछ रचा है। परमात्मा की सकाश, सकाश अर्थात् शक्ति इस चराचर जगत को रचती है। इस प्रकार ये सृष्टि का चक्र नित्य चलता रहता है। इसको कहा ही गया है कालचक्र, समय का चक्र, सृष्टि चक्र।

चक्र माना जिसका आदि और अंत न हो। जो नित्य चलता रहता है। दुनिया में भी जितने चक्र बने हुए हैं। वो चक्र भी नित्य चलते रहते हैं। दिन और रात का चक्र नित्य चलता रहता है। ऋतुओं का चक्र, मनुष्य पुनर्जन्म का चक्र नित्य चलता रहता है। प्राकृतिक साइकिल को भी अगर देखा जाये तो पानी वाष्पित होकर बादल बनते हैं, वो बादल जाकर के बरसते हैं, वो पानी फिर नदियों के द्वारा समुद्र में मिल जाता है, ये चक्र भी नित्य चलता रहता है। कोई भी चक्र की आदि और अंत नहीं है। दिन और रात के चक्र में कौन-सी घड़ी को आदि कहेंगे, क्या रात को बारह बजे यह चक्र आरंभ हुआ, सुबह चार बजे हुआ, छः बजे हुआ, दस बजे हुआ,

कब हुआ? ये चक्र है। चक्र माना जिसका आदि और अंत नहीं है? जो नित्य चलता रहता है। हाँ, मनुष्य ने अपनी व्यवस्था को बनाये रखने के लिए रात को बारह बजे के बाद दूसरा दिन कह दिया, लेकिन ज़रूरी थोड़े ही है कि रात को बारह बजे ही ये चक्र शुरू हुआ था।

इसी तरह ऋतुओं का चक्र कब शुरू हुआ, पता नहीं है। हाँ, मनुष्य ने अपनी व्यवस्था को बनाने के लिए पहली जनवरी,

नया साल कह दिया। किन्तु ये ज़रूरी थोड़े ही है कि पहली जनवरी को ही ये चक्र आरंभ हुआ। इसलिए कौन सी घड़ी को पहली घड़ी कहेंगे ये नहीं कह सकते, क्योंकि ये चक्र है। ऐसे ही ये सृष्टि का चक्र भी नित्य चलता रहता है, नित्य घूमता रहता है। लेकिन हर चक्र को चार अवस्थाओं से ज़रूर गुजरना पड़ता है। दिन और रात के चक्र की भी चार अवस्थाएं हैं। सुबह, दोपहर, शाम और रात्रि, रात्रि के बाद पुनः सुबह होती है।

ऋतुओं में भी चार अवस्था है - ग्रीष्म, शीतकाल, वर्षा और वसंत ऋतु। फिर ग्रीष्म आ जाता। इसी तरह इस काल चक्र की भी चार अवस्थाएं हैं - सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर और कलियुग। कलियुग के बाद पुनः सतयुग आता है। ये चक्र है, इसीलिए

ये नित्य चलना ही है और नित्य परिवर्तन, ये इस चक्र की प्रक्रिया है। परिवर्तन कुदरत का नियम है। परिवर्तन होता आया है और होता ही रहेगा।

भगवान इसलिए कहते हैं कि हे अर्जुन! कल्प के अंत में, कलियुग का जब अंत हो जाता है, तब सब मेरी प्रकृति अर्थात् मेरे समान स्वभाव को प्राप्त होते हैं। अर्थात् आत्मा पुनः अपने सतोगुण स्वरूप में आ जाती है। कल्प के आदि में मैं उनको बार-बार विशेष रूप से सृजन करता हूँ। आत्मा तो सदा शाश्वत है, आत्मा न मरती है, न जन्म लेती है फिर कैसे यह सृजन होता है? सृजन अर्थात् जो अकृति या शरीर बिना अचेत है। आत्मा परमधाम में अपने निज स्वरूप में, प्रकाश पुंज में है, उन्हें जागृत करता हूँ। जागृत करके पुनः इस संसार में, प्रकृति का आधार लेने के लिए प्रेरित करता हूँ। तो इस अर्थ में उसके पार्ट को जागृत करना, ये है कि भगवान आकर उसको बार-बार जगाता है अर्थात् सृजन करता है। फिर बताता है कि कल्प के लिए प्रेरित करता हूँ। कल्प के लिए प्रेरित करना अर्थात् सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर और कलियुग में पुनःपार्ट बजाने के लिए उसको प्रेरित करता हूँ। कल्प का भाव है - उत्थानोमुख परिवर्तन अर्थात् उत्थान की ओर परिवर्तन अर्थात् आत्मा दैवी संस्कारों में प्रवेश पाती है। यहाँ से कल्प का आरंभ होता है। वैसे ये चक्र है। चक्र कब शुरू होगा, कब पूरा होगा ये नहीं कह सकते हैं। इस चक्र की भी आदि अंत का पता नहीं है। उसका पहला प्रहर सुबह को माना जाता है। सुबह के समय में मनुष्यात्मायें जागृत होकर के दिन भर के कर्म के लिए अपने आप को प्रेरित करती हैं और रात को सारा कर्म समेटकर के सो जाती हैं। - क्रमशः

प्रार्थना से ज़्यादा महत्व... - पेज 2 का शेष

स्वहित से ऊपर निकल परहित का विचार करेगा। स्वयं के स्वार्थ का काम करने के बदले परमार्थ का काम करते उनको प्रसन्नता होगी। उनका मन अंदर ही अंदर खुश रहेगा, समय बीतते-बीतते उस व्यक्ति को परायों की प्रसन्नता में स्वयं का सुख लगेगा। वो दूसरों के सुख की झलक देख खुद के अंतर में अपूर्व उल्लास अनुभव करेगा। इस तरह ईश्वर सम्मुख मानव स्वयं की आत्मा की पहचान के साथ-साथ दुःखी और पीड़ित जीवों पर करुणा बरसाता रहेगा। परायों की चिंता करना, ये उनका स्वभाव बन जायेगा, परिजनों की चिंता तो मनुष्य करता ही है। वह समझता है कि उनकी पहली सेवा घर और परिवार से ही होती है। इसलिए ही वह मात-पिता की सेवा के साथ गरीब-दुखियों की सेवा करने का कार्य भी वो करता रहता है। ईश्वर के आशीर्वाद की इच्छा, अपने अंतर में ईश्वर को पाने की ख्वाइश जगाती है। इसी ख्वाइश के कारण ही अपना आत्म विकास होता है। समय बीतते-बीतते बाहर मूर्ति रूप में विराजित ईश्वर, साधक के हृदय में बसता है। मीरा ने हृदय में श्रीकृष्ण का अनुभव किया, संत तुलसीदास ने हृदय में राम को बसाया। महावीर ने कहा कि आत्मा के साथ ही परमात्मा छुपा हुआ है। जैसे छोटे से गुठली में आम का पेड़ छुपा हुआ है, ऐसे ही ईश्वर की प्रार्थना से ज़्यादा, ईश्वर के आशीर्वाद प्राप्त करने की प्रबल इच्छा साधक के लिए ज़्यादा उपकारक है।



सादुलपुर-राज.। 'श्रीमद्भगवद्गीता ज्ञान प्रवचन माला' कार्यक्रम के समापन सत्र में ब्र.कु. वीणा को प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित करते हुए लाल मोहम्मद भियानी, महामंत्री, राज. अभाव अभियोग प्रकोष्ठ, डॉ. विनोद अग्रवाल, डॉ. सुनील शर्मा, प्राचार्य तथा डॉ. नंदकिशोर मरोदिया, अध्यक्ष, अग्रवाल महासभा। साथ हैं ब्र.कु. चंद्रकांता तथा ब्र.कु. शोभा।

ख्वालों के आईने में...

जब आप धन कमाते हैं तो घर में चीज़ें आती हैं, लेकिन जब आप किसी की दुआएं कमाते हैं तो धन के साथ 'खुशी', 'सेहत' और 'प्यार' भी आता है।

मिटी का मटका और परिवार दोनों एक जैसे ही हैं... ऐसा इसलिए कि इसकी कीमत सिर्फ बनाने वाले को ही पता होती है, तोड़ने वाले को नहीं... और दोनों ही टूटने के बाद जुड़ने मुश्किल हैं...!

कथा सरिता



राष्ट्रहित में सिद्ध मंत्र

राणा प्रताप के अतिरिक्त राजस्थान में रघुपति सिंह ही एकमात्र ऐसा सेनानी था जो अकबर के सामने घुटने टेकने के लिए तैयार नहीं था। अपने परिवार से दूर वह राणा प्रताप की सहयता करता रहता था। उसके घर पर पहरा बिठा दिया गया, लेकिन वह घर आता ही नहीं था। उसके गुप्तचर ही उसे घर का समाचार दे दिया करते। एक बार उसका पुत्र बहुत ज़्यादा बीमारी हो गया। पुत्र की बीमारी जब अधिक बढ़ गई तो उसने घर जाने का निश्चय किया। एक शाम वह अपने घर पहुंचा तो पहरे पर खड़े सिपाही ने उसे पकड़ लिया। तब रघुपति सिंह ने कहा - देखो, मेरा बेटा बहुत बीमार है। मुझे एक बार उससे मिलने दो। फिर मैं स्वयं को तुम्हारे हवाले कर दूंगा। सिपाही को दया आ गई। उसने रघुपति सिंह को अंदर जाने दिया। बाहर सेनापति को रघुपति सिंह के घर आने की बात

पता चल गई। उसने आकर पहरे पर तैनात सिपाही से पूछा, तो सिपाही ने सच-सच बता दिया। तब सेनापति ने रघुपति सिंह के साथ उस सिपाही को भी कैद कर लिया। रघुपति सिंह ने सेनापति से सिपाही को छोड़ देने का आग्रह किया, किंतु वह नहीं माना और दोनों को अकबर के समक्ष पेश कर दिया। अकबर सिपाही से बोला - तेरे मन में दया आ गई, मतलब तू खुदा का बंदा पहले है और बादशाह का सिपाही बाद में। मैं खुश हुआ। जा अपना काम कर। फिर रघुपति सिंह से बोला - मैं तुम्हारी बहादुरी व इंसानियत का कायल हो गया। यह कहकर उसने उसे भी मुक्त कर दिया। वस्तुतः तीन बातें मानव व राष्ट्रहित में सिद्ध मंत्र हैं - अच्छाई की शक्ति का प्रचार करना, शंका से रहित होना तथा अच्छे लोगों की मदद करना।

डर नहीं, निर्भयता से...

ईरान के सुल्तान एक बार किसी कारणवश ईरान के एक कबीले कबूदजामा के सरदार नसरूद्दीन से नाराज हो गए। उन्होंने अपने एक अन्य सरदार को हुक्म दिया कि जाओ और उसका सिर काटकर ले आओ। अपने एक सम्बन्धी से नसरूद्दीन को यह समाचार मालूम हुआ। उसके रिश्तेदारों ने उसे तुरंत भाग जाने के लिए कहा तो वह बोला - अगर मेरी मौत मेरे पास आ रही है तो यहां से जाने के बाद वह यहां भी मेरा पीछा करेगी, इसलिए मेरे यहां से भाग जाने का सवाल ही पैदा नहीं होता। सरदार नसरूद्दीन के यहां पहुंचा और उसने सुल्तान का हुक्म सुनाया तो नसरूद्दीन ने हंसते हुए कहा - मेरा सिर हाज़िर है, लेकिन उसे यहां से काटकर दरबार

तक ले जाने में परेशानी होगी। बेहतर होगा कि मैं आपके साथ दरबार तक चलूं, वहां सुल्तान के सामने आप मेरा सिर काट देना। सरदार राजी हो गया। जब दोनों दरबार पहुंचे तो सुल्तान नसरूद्दीन को जीवित देखकर बेहद नाराज हुआ। हुक्म की तामील न करने के कारण उसने अपने सरदार को भी मौत की सज़ा सुना दी। तब नसरूद्दीन ने एक रूबाई में कहा - मैं अपनी बुद्धि के नेत्रों में तेरे द्वार के रजकणों को भरे हुए अकेला नहीं बल्कि सैकड़ों प्रार्थनाओं के साथ आया हूँ। तुमने मेरा सिर मांगा था तो मैं यह सिर दूसरे किसी को क्यों देता? इसीलिए मैं अपना सिर अपनी गर्दन पर डालकर तुम्हारे लिए ला रहा हूँ। नसरूद्दीन का यह निर्भय उत्तर सुनकर सुल्तान खुश हो गया और दोनों को छोड़ दिया। कथा संदेश देती है कि विकट परिस्थिति में भी निर्भयता से कार्य करना चाहिए। निर्भयता हमें ऐसी परिस्थिति से पार पाने का बल प्रदान करती है।

सदाचार से सम्मान

एक राजा विद्वानों का बहुत सम्मान करता था। एक पंडित के मन में जिज्ञासा पैदा हुई कि कोई पंडित अपनी विद्वता के कारण सम्मान पाता है या आचरण के कारण। उसने इसकी परीक्षा करने की ठानी। उसने मंत्री की उपस्थिति में राजकोष से एक सिक्का उठाया और जेब में रख लिया। दूसरे दिन फिर उसने दो सिक्के उठाए तथा अपनी जेब में रख लिए। मंत्री ने देखा, तो सोचा कि यदि यह रोज़ सिक्के उठाता रहा, तो एक दिन चोरी का आरोप उसी पर लगेगा। उसने राजा से कहा, आप जिन्हें महान विद्वान बताकर सम्मान देते हैं, उन पंडित जी ने दो बार सिक्कों की चोरी की है। राजा ने उसी समय

पंडित को जेल की सज़ा सुना दी। तब फिर पंडित बोला, महाराज, मैंने सिक्कों के लोभ में चोरी नहीं की। मैं यह देखना चाहता था कि विद्वान की पूजा उसके ज्ञान के कारण होती है या आचरण के कारण। इसी का उत्तर पाने के लिए मैंने सिक्कों की चोरी का नाटक किया। मुझे पता लग गया है कि सच्चा सम्मान पाने के लिए ज्ञानी के साथ-साथ सदाचारी होना भी आवश्यक है। ज्ञानी यदि सदाचारी नहीं है तो वह सम्मान का हकदार नहीं हो सकता। राजा बोले, पंडित जी, आप ठीक कहते हैं। सदाचार सर्वोपरि गुण है। सदाचार हर क्षेत्र में सम्मान पाता है, जबकि बेईमान एक न एक दिन अपना सर्वनाश कर लेता है।



पुणे-पिंपरी। चिंचवड महानगरपालिका के वर्धापन दिवस पर कॉर्पोरेशन की ओर से पिंपरी में 24 वर्ष से ब्रह्माकुमारीज द्वारा सामाजिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र की निःस्वार्थ सेवाओं के लिए ब्र.कु. सुरेखा को समाज रत्न पुरस्कार प्रदान करते हुए पूर्व उप मुख्यमंत्री अजित दादा पवार। साथ हैं महापौर सौ. शकुंतला धराडे, उपमहापौर प्रभाकर वाघेरे, सुप्रसिद्ध खिलाड़ी अंजलि भागवत, चेयरमैन हीरानंद आसवानी, संजोग वाघेरे तथा अन्य।



मालेगांव-महा. चैतन्य नवदुर्गा देवियों की झाँकी के उद्घाटन अवसर पर देवियों की आरती करते हुए विधायक दादा भूसे, ब्र.कु. शकुंतला, ब्र.कु. ममता, ब्र.कु. सुलभा तथा अन्य गणमान्य जन।



केसर्द-चंदन नगर(महा.)। ज्ञानचर्चा के पश्चात् संजय गांधी निराधार के अध्यक्ष रामदास हरगुडे को ओमशांति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. उज्वल व ब्र.कु. जयश्री।



भोपाल-म.प्र. विट्टल मार्केट ग्राउण्ड में भोपाल रन, एन.जी.ओ. तथा ब्रह्माकुमारीज द्वारा आयोजित हेल्थ एक्जीविशन के दौरान समूह चित्र में ब्र.कु. अवधेश बहन, ब्र.कु. प्रहलाद तथा अन्य।



रतलाम-म.प्र. सड़क दुर्घटना में पीड़ितों की स्मृति में आयोजित 'यादगार दिवस' के कार्यक्रम के दौरान अतिथियों को सौगात देने के पश्चात् उपस्थित हैं ब्र.कु. सविता, ब्र.कु. गीता, ऑटोमोबाइल के मालिक मुस्तफा पकवाला, लायन्स क्लब के अध्यक्ष संजय गुणावत तथा अन्य अतिथिगण।



वर्धा-महा. महिला कारागृह में साप्ताहिक राजयोग प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपस्थित हैं जेल अधीक्षक बावीस्कर जी, जेलर सहायिका शोके, ब्र.कु. ज्योति, ब्र.कु. रीना तथा अन्य।

जब कभी दही बड़ा बनाना होता है तो उड़द/मूंग की दाल को बड़ा बनाने से एक दिन पहले रात को भिगो के रख देते हैं। दूसरे दिन उसे मिक्सी में अच्छी तरह से पीसते हैं। फिर उसके पकौड़े बनाकर उसे पानी में दोबारा डालते हैं ताकि वो नरम रहे। फिर अंत में उसे दही में डालकर उसके ऊपर सजावट करके खाने के लिए परोसते हैं। अब आप देखिए कि बड़ा बना कैसे? सबसे पहले उसे रात भर भीगना पड़ा। उसके बाद उसे अच्छी तरह से पिसना पड़ा, पिसने के बाद उसे खौलते तेल के कराही में अपने आपको तलवाना पड़ा। फिर दोबारा उसे पानी में भीगना पड़ा। फिर जाकर दही में दोबारा उसे डुबकी लगानी पड़ी, तब जाकर उसमें स्वाद आया और लोगों ने उसे पसंद किया। अब आप बताओ, बड़ा नहीं बड़ा कैसे बनेंगे?

सभी को बस बड़ा बनने का शौक है, लेकिन बड़े की तरह अपने आप को तपाने की, जलाने की, सहन करने की ताकत नहीं है। बड़ा सभी किसी पद, पोजीशन, स्टेटस को प्राप्त कर लेने वाले को मानते हैं, और आप भी यही मानते होंगे। लेकिन हमारे इतिहास में, हमारे समाज में बड़ा उसे माना जाता है जो सभी के साथ रहकर, सभी की भावनाओं की कद्र करते हुए, सभी की एक-एक जरूरतों को पूरा करते हुए, सभी का सम्मान करते

बड़ा कैसे बनें...?

हुए, सभी का सहन करते हुए अपने आप को सबके बीच रखे। तो सच में वो बड़ा कहलाने लायक होता है। एक उदाहरण से आप इसे समझ सकते हैं कि आज सभी को खुद को सम्भालने का स्वमान नहीं है, और ना ही खुद के लिए सम्मान

ही आपके यहाँ नौकरी करते हैं पर हमारी भी कोई इज़्जत है। अब यहाँ इज़्जत से हमें यह अर्थ ज़रूर निकालना चाहिए कि सभी को सम्मान की ज़रूरत है। पैसे से हम किसी का दिल नहीं खरीद सकते, उसके दिल पर राज नहीं कर सकते।

मजबूरी में नहीं पड़ पाता, लेकिन इसका ये अर्थ नहीं है कि वो मजबूर है, बल्कि उस आत्मा के अंदर वही नेचर मौजूद है जो आपके अंदर है। लेकिन हम अपने पद, पोजीशन, पैसे के अहंकार में दूसरों को सम्मान देना भूल जाते हैं। आप किसी को याद दिलाओ कि मैं बड़ा हूँ, ये तो शोभता ही नहीं। अरे! आप बड़े ही हैं, लेकिन आपको ये बताना पड़ रहा है,

भी थे, कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने कुछ भी पढ़ा नहीं था, लेकिन बाबा ने कभी ना पढ़ाई देखी, ना उम्र देखा, सबको सम्मान दिया और सिरहाने



ब.कु.अनुज,दिल्ली

आपने दुनिया में प्रचलित एक डिश खायी होगी, जिसको हम कहते हैं दही बड़ा। लेकिन इसके बनाने की प्रक्रिया को हमने जानने की कोशिश की कि ये बनता कैसे है? खाने में ये जितना चटपटा और स्वादिष्ट होता है, उतना ही उसे बनाने में समय लगता है। आज सभी किसी न किसी अभिमान के साथ अपने को जोड़कर कहते हैं कि मैं बड़ा तू छोटा, मैं सही, मैंने जो कहा वो सही। बड़ेपन का भाव लाने में कोई अपने आपको पीछे नहीं रखता। लेकिन बड़ा बनना इतना आसान नहीं है।



है। सभी घर में बड़े हैं, लेकिन सबका व्यवहार छोटे से भी बदतर है। आज मालिक नौकर के साथ नौकर बन जाता, ड्राइवर के साथ ड्राइवर बन जाता, वो उसके साथ वैसे ही बात करता जैसे नौकर बात करता है। नौकर खुद बोलता कि साहब को इतनी समझ नहीं है कि अपने से छोटों से कैसे बात करनी है। बात बात में कह भी देते हैं कि हम भले

समाज में ये जो चैन बनी है कि कोई बहुत पढ़-लिख गया, किसी ने थोड़ी कम पढ़ाई की, कोई अनपढ़ है, कोई गंवार है, तभी तो यह समाज चल रहा है। अगर वो भी पढ़ लेता, तो जो आपके घर के काम हैं, वो कैसे करता, वो तो अच्छी नौकरी कर लेता। लेकिन आज सभी का मन अलग-अलग है। किसी का मन करता है पढ़ने का और किसी का नहीं करता और कोई

इससे बड़े शर्म की बात और क्या हो सकती है! हमारे ब्रह्माकुमारीज के संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने छोटी छोटी कन्याओं को इतना सम्मान दिया, इतना ऊँचा उठाया, उनको कहते थे कि आप छोटे नहीं हैं, आप ठाकुर हैं, आप पूजनीय हैं, इतना सम्मान दिया। उसमें हर तरह के लोग शामिल थे, पढ़े-लिखे

बिठाया। उनकी पालना में पलने वाली दादियाँ भी वैसे ही सभी को स्नेह प्यार देकर आगे बढ़ाती रहीं और बढ़ा रही हैं। आज इस यज्ञ में बहुत अलग-अलग तरह के संस्कार की आत्मायें हैं, लेकिन सबको एक साथ लेकर चलना, ये है बड़े पन की निशानी। सबको सहना भी और सबको समाना भी है, तब जाकर आप बनेंगे बड़े बड़े बड़े।

उपलब्ध पुस्तकें



प्रश्न - मेरा अमृतवेला बहुत मिस होता है। देर से उठने से बहुत गिल्टी फील होती है। मैं चाहती हूँ मैं भी इस समय ईश्वरीय याद का सुख लूँ। कोई सहज उपाय बतायें।

उत्तर - बहन, यह सत्य है कि चारो युगों में सबसे ज्यादा परम सुख अमृतवेले ही मिलता है। इसी समय हमारे अति प्राण प्यारे शिव बाबा हम पर अपनी किरणें डालते हैं, प्रकृति भी शांत होती है व चित्त भी शांत होता है। मन में दृढ़ संकल्प करो कि सवेरे चार बजे उठना ही है। ब्रेन में अलार्म भरकर सो जाओ। विधि है ...बाबा को याद करके पाँच बार यह संकल्प करो कि मुझे चार बजे उठना है. बस ब्रेन में अलार्म बजेगा और आप फ्रेश उठेंगे। एक बात सभी को जाननी ज़रूरी है कि पेट को ठीक रखना अति आवश्यक है। पेट में कब्ज, गैस व एसिडिटी न हो। नहीं तो सवेरे उठा नहीं जाएगा और यदि उठ भी गये तो आनंद नहीं आयेगा। इसके लिए अपना खानपान भी ठीक करें व किसी अच्छे आयुर्वेदिक डॉक्टर से लम्बा उपचार भी करायें।

प्रश्न - पवित्रता की स्थिति अति महत्वपूर्ण है, परन्तु हमारे लिए यह कठिन भी है, क्योंकि हमारा पुराना जीवन अच्छा नहीं रहा। हम बुरे संग में रहे, हम अपनी पवित्रता को बहुत बढ़ाना चाहते हैं, कुछ पावरफुल संकल्प व विधि हमें बताइये।

उत्तर - निःसन्देह, पवित्रता विश्व की सर्वश्रेष्ठ शक्ति है। परन्तु कलियुग के गन्दे माहौल में अनेक युवक बुरे संग में अपवित्रता का मार्ग अपना लेते हैं और आजकल की मेडिकल साइंस इसमें उन्हें साथ देती है। पवित्रता की शक्ति योगबल से ही बढ़ती है। अशारीरीपन का अभ्यास, स्वमान, ज्ञान-मुरली - ये ही सब साधन पवित्रता को बढ़ाने वाले हैं। हम कुछ प्रतिज्ञा के संकल्प लिख रहे हैं, वो आपको मदद करेंगे। प्रतिदिन अमृतवेले अवश्य उठो और एकान्त में इस तरह स्वयं से बातें करो - मैंने भगवान को पवित्र रहने का वचन दे दिया है। वचन देकर

मैं तोड़ूंगा नहीं। पवित्रता ही तो मेरा स्वधर्म है, इसी से तो सच्ची सुख शान्ति है, मुझे इस स्वधर्म को अपनाना है। पवित्रता अपनाना तो भगवान की आज्ञा है, मुझे इसकी पालना करनी है। मैंने एक बार जिस पथ पर कदम रख दिया अब मैं पीछे नहीं हटूंगा। मुझे तो पवित्र बनकर इस परमात्म-कार्य में सहयोग देना है। इस तरह के पॉज़ीटिव संकल्प करने से हमें परमात्म शक्ति प्राप्त होगी व ये मार्ग सरल हो जाएगा।

प्रश्न - मैं आपसे एक पर्सनल प्रश्न पूछना चाहता



मन की बातें
-ब.कु.सूर्य

हूँ कि क्या आपको कभी तनाव नहीं होता? तनाव मुक्ति का कोई सरल उपाय बतायें।

उत्तर - यह युग तनाव का युग बन गया है। विकास कार्यों के साथ तनाव का भी खूब विकास हुआ है। सत्यता यह है कि मनुष्य का मन अति निर्बल हो गया है, इसलिए उसे जल्दी ही छोटी बात में भी तनाव हो जाता है। हम देवता तो नहीं हैं जिन्हें तनाव न हो। तनाव हमें भी होता है, परन्तु हमारे पास

ईश्वरीय ज्ञान का भण्डार है, इसलिए हम जल्दी ही तनाव मुक्त भी हो जाते हैं। राजयोग का अभ्यास हमें मदद करता है।

प्रश्न:- बाबा हमेशा कहते हैं कि बाप के दिलतखनशीन रहो। कौन बैठ सकते हैं बाबा के दिल पर और हम कैसे समझें कि हम दिलतखनशीन है या नहीं?

उत्तर:- भगवान के दिल पर राज्य करना - सोचकर ही कितना आनन्द आता है। इसका अर्थ है हमें वे बहुत प्यार करते हों, वे हमें चाहते हों, वे हमारा हमेशा ध्यान रखते हों। यह फीलिंग अंदर ही अंदर आयेगी। कई ये सोचकर परेशान रहते हैं कि शायद बाबा के दिल पर तो वही हैं जो साकार में उनसे स्टेज पर मिलते हैं। वे कभी-कभी यह भी देखते हैं कि स्टेज पर तो बाबा उन्हें बहुत प्यार कर रहा है जिनकी स्थिति निम्न स्तर की है तो कईयों के बहुत संकल्प चलते हैं। परन्तु नहीं, वे तो प्यार के सागर हैं, सबको ही प्यार करते हैं। देखना ये है कि जिन्हें वे प्यार करते हैं, उनके प्यार का रेसपांस वे क्या करते हैं? यदि वे ईश्वरीय आज्ञाओं पर पूर्णतया नहीं चलते तो प्यार के सागर का प्यार भी उनका कल्याण नहीं कर सकता।

घर बैठे ही आपको बाबा का प्यार अनुभव होगा, उनकी मदद अनुभव होगी, उनकी दृष्टि अनुभव होगी। अमृतवेले सुखद अनुभूति होगी, मुरली से उसका प्यार अनुभव होगा। ये है सच्चा प्रभु प्यार। भगवान के दिल पर चढ़ने वालों की तीन धारणाएं होंगी। प्रथम तो उन्होंने बाप को अपने दिल में बिठाया होगा, इसका अर्थ है कि वे योगयुक्त होंगे। दूसरा वे मास्टर सर्व शक्तिवान के नशे में रहेंगे और तीसरा उनकी स्थिति श्रेष्ठ होगी। श्रेष्ठ स्थिति अर्थात् वे सदा एकरस व प्रसन्न रहेंगे, उनके मूड नहीं बदलेगा, वे क्रोध नहीं करेंगे, वे परेशान नहीं होंगे और वे हर परिस्थिति में शांत व अचल अडोल रहेंगे।

देखिए 'अपना DTH' में प्रती 24 घंटे 'पीस ऑफ़ माइंड चैनल' ...उसके साथ 100 अन्य चैनल भी प्रती

अपने डी.टी.एच. डिश के डायरेक्शन का करें परिवर्तन...

Satellite Position = 75° East, Satellite = ABS-2
LNB Frequency = 10600/10600, Frequency = 12226/12227
Polarization = H, Symbol = 44000
System = MPEG-2(DVB-S) / MPEG-4(DVB-S2)
FEC = 3/4, 22K = On/Auto, Mode = All/FTA

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें... 810477711/7014140133

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

स्मृति दिवस कर्मातीत बनने का प्रेरक

- ब्र.कु. सूर्य, माउण्ट आबू



कलि के इस विकराल काल में भी अनेक महान् विभूतियों ने समय-समय पर वसुंधरा के आँचल को सुशोभित किया, परंतु उनके चले जाने के बाद पुनः धरती माँ की कोख सूनी हो गई। कुछ ही महान पुरुष ऐसे हुए जो इस जननी को अपना महान उत्तराधिकारी दे सके। उनमें सर्व महान हुए, नवयुग के सृष्टा प्रजापिता ब्रह्मा, जिन्होंने जगती को सहारा भी दिया और धीरज भी बंधाया और अनेक महान वत्स इसके आँगन को प्रफुल्लित करने वाले प्रदान किये जो कि साकार में मानो उनके ही रूप हैं। किसी भी महान व्यक्ति की महानता इस बात से भी आंकी जा सकती है कि वह कितने महान पुरुषों का निर्माण करता है।

जनवरी मास प्रत्येक ब्रह्मा-वत्स के लिए अंतर्मुखी व एकांतवासी बनने का समय होता है। यह कुछ प्रेरणाएं लेकर आता है और वरदान देकर चला जाता है। जो योगी इस समय का पूर्ण लाभ उठाते हैं वे स्मृति स्वरूप होकर कर्मातीत स्थिति की ओर बढ़ जाते हैं। कर्मातीत अवस्था एक अत्यंत निराली, परम-आनंद युक्त, परमात्मा की समीपता की स्थिति है। तो आओ हम सब पिताश्री के पद चिन्हों पर चलकर कर्मातीत स्थिति को प्राप्त करें।

कर्मातीत अवस्था क्या है?

राजयोग-अभ्यास का लक्ष्य कर्मातीत होना है। राजयोग कर्मों में कुशलता लाकर, कर्मों को दिव्य बना देता है। कर्मातीत अर्थात् कर्मों से अतीत। पिछले 63 जन्मों में प्रत्येक आत्मा ने विकर्मों का जो विपुल भण्डार बनाया है, उसे योगाग्नि में भस्म करके विकर्म-मुक्त होना कर्मातीत बनना है।

हम देखते हैं कि प्रत्येक कर्म, उसके संकल्प व उसका चिन्तन या बोझ मनुष्य पर प्रभाव डालता है। परंतु कर्म करते हुए, कर्मों के प्रभाव से परे हो जाना-इसे कर्मातीत अवस्था कहा जाता है। किसी के पास चाहे अथाह धन, सम्पत्ति व वैभव हों और वह उनका प्रयोग भी करता हो, परंतु पदार्थों का प्रयोग योगयुक्त होकर करना व पदार्थों का उपभोग अनासक्त होकर करना-ये है कर्मातीत स्थिति। ऐसा न हो कि पदार्थ

एक मनुष्य को प्रजापिता ब्रह्मा कहना-शायद मनुष्यों के गले न भी उतरता हो, परंतु जो उन्हें जानते हैं, जिन्होंने उनके ब्रह्मा होने के कारणों पर ध्यान दिया हो वे इस सत्य से आँखें नहीं मूंद सकते। वे अनुभव कर सकते हैं कि कैसे पिताश्री भाग्य-विधाता प्रजापिता ब्रह्मा ही थे जिन्होंने इस सृष्टि पर वे आदर्श निर्माण किये जिन्हें अपनाकर मानव देवता और संसार स्वर्ग बन जाएगा। वे इस धरती पर रहकर एक महान ऋषि बने और सर्वश्रेष्ठ कर्मातीत अवस्था को प्राप्त हुए। उन्हीं के अनुभवों के आधार पर यहाँ कर्मातीत अवस्था का उल्लेख किया गया है।



ही हमारा उपभोग करते रहें।

अपने पूर्व जन्मों के व वर्तमान के विकर्मों के कारण मनुष्य अनेक बंधनों में बंधा हुआ है। तन, मन व संबंधों के बंधन उसे चिंतित करते हैं। परंतु कर्मातीत अवस्था पूर्ण बंधनमुक्त अवस्था है। जब मनुष्यात्मा के संपूर्ण बंधन समाप्त हो जाएं, कुछ भी उसे योगयुक्त स्थिति से

नीचे न लाए, यही योगी की कर्मातीत अवस्था है।

परंतु जैसा कि शास्त्रवादी लोग मानते हैं कि इस मुक्त स्थिति में आत्मा पाप व पुण्य दोनों कर्म से मुक्त हो जाती है, ऐसा ईश्वरीय मत नहीं है। इस मुक्त कर्मातीत अवस्था में विकर्मों का संपूर्ण अभाव व पुण्य कर्मों की संपूर्णता होती

है। कर्मातीत अवस्था के समीप पहुँचा हुआ योगी विकर्माजीत बन जाता है अर्थात् उससे कोई सूक्ष्म विकर्म भी नहीं होता और पुण्य कर्म भी वह संपूर्ण अनासक्त भाव से करता है। इन्हीं पुण्य कर्मों का बल उसे कर्मातीत से संपूर्ण बनाने में मदद करता है।

पिताश्री ब्रह्मा बाबा ने ऐसी ही श्रेष्ठ

कर्मातीत अवस्था को प्राप्त किया। स्मृति-दिवस हमें भी इसी प्रकार बंधन-मुक्त बनने की प्रेरणा देता है। इस कर्मातीत अवस्था के समीप पहुँचकर मन पूर्णतया विरक्त हो जाता है, उसके सभी आकर्षण समाप्त हो जाते हैं और वह निरंतर योग की आनंदकारी स्थिति में स्थित हो जाता है।

कर्मातीत बनने में विघ्न

यों तो सबसे बड़ा विघ्न, ऊँचे लक्ष्य पर दृढ़ न होना व उसे प्राप्त करने में अलबेलापन ही है। परंतु कई योगी ऐसी अवस्था प्राप्ति की इच्छा रखते हुए भी अपने सामने एक दीवार अनुभव करते हैं। वह दीवार क्या है? जो कभी-कभी तो उन्हें दिखाई भी नहीं पड़ती और यदि दिखाई देती भी है तो उसकी सुंदरता को देखकर वे उसे तोड़ना नहीं चाहते। यह विशेष विघ्न या दीवार है-स्वार्थ की। जीवन में स्वार्थ की कहानी बड़ी लम्बी होती है। पग-पग पर प्रत्येक मनुष्य पहले स्वार्थ का ही ध्यान रखता है, इसे ही ध्यान में रखकर वह कोई काम करता है या निर्णय लेता है। हम सब या तो लौकिक कार्यों में व्यस्त हैं या अलौकिक कार्यों में। दोनों में ही हमारा स्वार्थ हमें बंधन में बांधता है। यदि कोई मनुष्य अपने सूक्ष्म स्वार्थ को महसूस करके इस बंधन को तोड़ दे तो वह तेजी से कर्मातीत अवस्था की ओर बढ़ सकता है। हमें कर्मातीत होने के लिए सर्व प्रकार के बंधनों से मुक्त होना है।

बंधन व उनसे मुक्ति...

आज के मानव की ज़िन्दगी कहीं बोझ तले दबी हुई दिखाई देती है। न जाने कितने बंधनों का बोझ सिर पर ढोते हुए मनुष्य अपने जीवन की यात्रा करता है। सबसे पहले मानव अपने नकारात्मक विचारों को मन में उठाकर चलता है जिससे सीधे ही उसके शारीरिक सेहत पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। ऐसे में अगर हमें इन बंधनों के बोझ से मुक्त होना है तो अपने आप को थोड़ा सा अवकाश देकर देखना होगा कि कहीं हमारी ज़िन्दगी को हम स्वयं ही तो जटिल नहीं बना रहे! न जाने कितने बंधन हैं, जिनसे हम मुक्त भी हो सकते हैं। तो

आओ हम उन बंधनों को जानें और उनसे मुक्त होने का संकल्प लें।

बंधन व उनसे मुक्ति

जैसे यदि किसी मनुष्य को रस्सी से बांध दिया जाए तो वह कुछ भी नहीं कर सकता। वह परवश हो जाता है। इसी प्रकार प्रत्येक मनुष्यात्मा अनेक बंधनों में बंधी है। हमें पहले ज्ञान-बल से अपने बंधन खोलने हैं, फिर योगाग्नि में उन्हें जला देना है।

पहला बंधन-मन का बंधन मनुष्य चाहता है तीव्र पुरुषार्थ करना, परंतु

मन उसे करने नहीं देता। व्यर्थ, हीन, निराशात्मक व कमजोर विचार बार-बार मन को अपने अधीन कर लेते हैं। ज्ञान-बल से विचारों को महान व शक्तिशाली बनाकर हम इन बंधनों से मुक्त बनें।

दूसरा बंधन-व्यर्थ बोल व व्यर्थ कर्मों का बंधन

व्यर्थ व विस्तार के बोल बोलकर, मनुष्य निरंतर अपनी शक्ति को नष्ट करता है। वो भूल जाता है कि योगी बोल का रस नहीं लेते, वे तो मौन



का रस लेते हैं। तो हम चेक करें कि जो बोल हमने बोला या जो कर्म हमने किया, वह फल देने वाला है या निष्फल है। यदि निष्फल है तो उसका त्याग कर दें।

तीसरा बंधन-तेरे-मेरे का

इस भावना से ही मनुष्य तनाव व परेशानी के बीज बोता है। इससे मुक्त होने के लिए बेहद की वृत्ति बनाने की आवश्यकता है।

चौथा बंधन-स्वभाव, संस्कार का पुराने स्वभाव-संस्कार भी मनुष्य को बरबस बांध लेते हैं। तो जैसे बाबा सदा ही अपने अनादि आदि संस्कारों के स्वरूप बनकर रहे, हम भी सदा इसी स्वरूप में रहें कि ये पुराने संस्कार मेरे नहीं, मेरे तो ये दिव्य संस्कार हैं। चाहते न हों और संस्कार कर्म करा दें-यह है बंधन और हमारे स्वभाव संस्कार हमें

'वाह! ज़िन्दगी वाह!' से सभी की ज़िन्दगी हुई वाह!

केशोद-गुज.। कन्या विनय मंदिर के ग्राउण्ड में स्कूली छात्राओं के साथ-साथ शहर के अति गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में 'वाह ज़िन्दगी वाह' कार्यक्रम में दिल्ली से आये मोटिवेशनल स्पीकर व जर्नलिस्ट ब्र.कु. अनुज ने ज़िन्दगी के कुछ उन पहलुओं को छुआ जो हमारी ज़िन्दगी को अति खुशहाल बना सकते हैं। उन्होंने कहा कि ज़िन्दगी मिली है किसी के काम आने के लिए, लेकिन हमारा सारा वक्त बीत रहा है कागज़ के टुकड़े कमाने के लिए', अर्थात् हम अपनी ज़िन्दगी में पैसे को, पद को, प्रतिष्ठा को अधिक महत्व देते हैं। इसमें हम स्वयं को भूल जाते हैं। हमें समझना ये है कि यदि हम स्वयं को



कार्यक्रम के दौरान ब्र.कु. गंगाधर का शॉल पहनाकर सम्मान करते हुए गोपाल भाई। मंचासीन हैं उद्योगपति गोपाल सींगाळा, ब्र.कु. अनुज, ब्र.कु. रूपा तथा डॉ. प्रवीण गजेरा।

महत्व ज्यादा दें, स्वयं को खुशी प्रदान करें, स्वयं से खुश रहें, खुश होकर कर्म करें तो हमारी ज़िन्दगी 'वाह वाह' हो जायेगी। ऐसी ज़िन्दगी जीने के लिए बस

थोड़ा सा हमें अपने आपको टाइम देना होगा। इस कार्यक्रम में माउण्ट आबू से ओमशान्ति मीडिया के सम्पादक ब्र.कु.

छात्राओं के साथ शहर के गणमान्य लोगों ने भी लिया भाग।



गंगाधर भी उपस्थित थे। कार्यक्रम के अंत में केशोद सेवाकेन्द्र की संचालिका ब्र.कु. रूपा ने आशीर्वचन दिये। इसके अलावा शहर के विभिन्न स्कूल

कॉलेजेज़ तथा अन्य संस्थाओं में भी कार्यक्रम का सफल आयोजन हुआ जिसे लोगों ने खूब सराहा तथा

हैम रेडियो प्राकृतिक आपदा काल में संचार व सुरक्षा का विकल्प



कार्यक्रम के दौरान दादी जानकी के साथ दीप प्रज्वलित करते हुए डॉ. कार्तिकेयन, गोपाल माधवन, रेमोन पेरेज ब्रेट, एस. सूरी, ब्र.कु. मृत्युंजय, ब्र.कु. रजनी, ब्र.कु. यशवंत पाटिल, ब्र.कु. नंदा तथा अन्य।

शांतिवन। वर्तमान समय का युग विज्ञान का है। परंतु प्राकृतिक आपदाओं के समय ऐसी विपदा आ जाती है जिसका मुकाबला करना कठिन हो जाता है। ऐसे में हैम रेडियो की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। प्राकृतिक विपदा के समय हैम रेडियो का दूसरा कोई विकल्प नहीं है। उक्त उद्गार सी.बी.आई. के पूर्व निदेशक तथा हेमरेस्ट-2016 के अध्यक्ष डॉ. कार्तिकेयन ने रेडियो मधुवन तथा हैम रेडियो के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित रजत जयंती समारोह में व्यक्त किये। 'मन की शक्ति और अध्यात्म हर तरह की विपत्तियों में सहायता करते हैं। जब तक हमारे अंदर आध्यात्मिक शक्ति

रहेगी तब तक परमात्मा हर वक्त हमारा मददगार रहेगा' - ब्रह्माकुमारी संस्था की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी।

'जब देश व दुनिया में कोई संचार व्यवस्था कार्य नहीं करती है, तब हैम रेडियो कार्य करता है। हमें खुशी है कि इससे आपात काल में जन सेवा के लिए मदद मिलेगी' - एमेच्योर रेडियो संघ के अध्यक्ष गोपाल माधवन।

'भारत में आकर इस समारोह में भाग लेना अच्छा लग रहा है। भारत की संस्कृति का तारतम्य सुखद है' - वेनेजुएला हैम रेडियो ऑपरेटर तथा सुप्रसिद्ध ऑन्कोलॉजिस्ट रेमोन पेरेज ब्रेट।

'पूरे भारत में करीब 72 हजार हैम

रेडियो लाइसेंस धारक हैं, जो समय प्रति समय पर विपदाओं के समय लोगों की मदद करते हैं' - एमेच्योर रेडियो इंस्टीट्यूट हैदराबाद के संस्थापक निदेशक एस. सूरी।

कार्यक्रम में हैम रेडियो के वाइस प्रेसीडेंट ब्र.कु. मृत्युंजय, ब्रह्माकुमारी संस्थान जापान की प्रभारी ब्र.कु. रजनी ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि इसे और व्यापक रूप में प्रचारित एवं प्रसारित करने की जरूरत है। रेडियो मधुवन के कोऑर्डिनेटर तथा कार्यक्रम आयोजक ब्र.कु. यशवंत पाटिल, ब्र.कु. नंदा समेत कई लोगों ने अपने-अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम में सभी लोगों ने ऐसे संचार माध्यम के प्रति अपनी खुशी ज़ाहिर की।

गलत आदतों से मुक्ति, स्वयं का परिवर्तन ही समाज को देगा नई दिशा

ओ.आर.सी.-गुरुग्राम।

ब्रह्माकुमारीज़ के ओम शांति रिट्रीट सेंटर में उच्च शिक्षा से जुड़े शिक्षाविदों के लिए 'एज्युकेशन फॉर क्वालिटी ऑफ लाइफ' विषय पर कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ के अतिरिक्त सचिव राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन ने कहा कि वर्तमान में शिक्षा के क्षेत्र में हम उन्नति कर रहे हैं, लेकिन जीवन स्तर में ऐसा कोई बदलाव नहीं है। शिक्षा में आध्यात्मिकता कहीं भी नहीं है, जिसके कारण आज शिक्षा व्यावसायिक लगती है। यदि शिक्षा में आध्यात्मिक

हम वर्तमान को भूल जाते हैं। अगर हम जो बीत गया उसे भूलें तो जीवन सहज हो जायेगा।

सुप्रसिद्ध मोटिवेशनल स्पीकर ब्र.कु. शिवानी ने कहा कि जो भी हम खुश रहकर करते हैं, वो कार्य हमें खुशी प्रदान करता है। लेकिन परेशान होकर कार्य करने से हम छोटी-छोटी परिस्थितियों से घबरा जाते हैं। परिस्थितियाँ कम हो जाएं ऐसा सोचते हैं, लेकिन मन की शक्ति को नहीं बढ़ाना चाहते। लेकिन यदि आप मन को नियंत्रित करते हैं तो किसी भी परिस्थिति को नियंत्रित कर सकते हैं।



कार्यक्रम में शिक्षाविदों को सम्बोधित करते हुए मोटिवेशनल स्पीकर ब्र.कु. शिवानी।

शिक्षा सम्मिलित हो जाए तो जीवन में मूल्यों का विकास भी होगा और लोग ईमानदारी व सत्यता से जीवन जियेंगे। ओ.आर.सी. निदेशिका ब्र.कु. आशा ने कहा कि आध्यात्मिकता हमें वो शक्ति प्रदान करती है जिससे हम बुराइयों एवं गलत विचारों से मुक्त हो सकते हैं। बीती हुई बातों का इतना असर जीवन में पड़ जाता है कि जिसमें

इस कार्यक्रम में दिल्ली एन.सी.आर. क्षेत्र के उच्च शिक्षा संस्थानों के अनेक निदेशक, कुलपति एवं प्रोफेसर्स ने भाग लिया। जिनमें मुख्य रूप से डॉ. सत्य नारायण, उप कुलपति, बी.एम.एल. विश्वविद्यालय, डॉ. प्रभाकर राव, प्रिंसिपल, जाकिर हुसैन कॉलेज, दिल्ली, डॉ. प्रीति पंत एवं अन्य कई शिक्षाविद शामिल हुए।

कार्यालय- ओम शान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510. सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - 9414006096, 9414182088, Email- omshantimedia@bkivv.org, mediabkm@gmail.com, Website- www.omshantimedia.info

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 190 रुपये, तीन वर्ष 570 रुपये, आजीवन 4500 रुपये। विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक) कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/15-17, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2015-17, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 13th Dec 2016

संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं डी.बी.प्रिंट सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।